कौल-कल्पतरु

चण्डी

वर्ष ६०

अङ्क ८-९

पर्व-पत्र

- **कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा, शुक्रवार** (२ **नवम्बर, २००१)** : अशून्य-शयन द्वितीया-व्रत। **अक्षय धन, दाम्पत्य, सुख-प्राप्ति हेतु श्रीलक्ष्मी-युत श्रीविष्णु-पर्यङ्क का ध्यान-पूजन** करे।
- **कार्तिक कृष्णा तृतीया, रविवार** (४ **नवम्बर, २००१)** : भद्रा दिन ११-१८ तक। **करक (करवा)। श्रीगणेश-चतुर्थी-व्रत।** (चन्द्रोदय रात्रि ८.३)। **चन्द्र-अर्घ्य-दान।**
- **कार्तिक कृष्णा अष्टमी, वृहस्पतिवार** (८ **नवम्बर, २००१)** : श्रीराधा-अष्टमी।
- **कार्तिक कृष्णा द्वादशी, सोमवार** (१२ **नवम्बर, २००१)** : सोम-प्रदोष द्वादशी-व्रत। **श्री धनवन्तरि-जयन्ती। कामेश्वरी-जयन्ती-त्रयोदशी। सायं-काल यम-राज के लिए दीप-दान।**
- **कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी, मङ्गलवार** (१३ **नवम्बर, २००१)** : नरक-चतुर्दशी। 'यम' और 'भीष्म' को जल-दान। **सन्ध्या-समय घर के बाहर चार बत्तियों का 'दीपक'** जलाए।
- **कार्तिक चतुर्दशी-अमावास्या, बुधवार** (१४ **नवम्बर, २००१)** : **दीपावली।** प्रातः-काल यम-तर्पण, श्रीहनुमत्-दर्शन। **सायं-काल दीप-दान, श्रीलक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर** आदि पूजा। मध्य-रात्रि में **श्रीमहा-काली-ध्यान-पूजा।**
- **कार्तिक अमावास्या-कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा वृहस्पतिवार** (१५ **नवम्बर, २००१)** : स्नान-दान-व्रत। अश्वत्थ-मूल में **भगवान् विष्णु का ध्यान** कर पूजन-प्रदक्षिणा अन्न-कूट। **गोवर्धन-पूजा।**
- **कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा-द्वितीया, शुक्रवार** (१६ **नवम्बर, २००१)** : मध्याह्न-काल में **प्रतिपदा-युक्ता भ्रातृ द्वितीया, यम-द्वितीया। यमुना-स्नान। यम-तर्पण।**
- **कार्तिक शुक्ला तृतीया-चतुर्थी, रविवार** (१८ **नवम्बर, २००१)** : रवि-वती वैनायकी श्रीगणेश-चतुर्थी-व्रत।
- **कार्तिक शुक्ला चतुर्थी, सोमवार** (१९ **नवम्बर, २००१)** : त्रि-दिवसीय **श्रीसूर्य-षष्ठी-व्रत प्रारम्भ।** (भद्रा दिन ११.७ तक)।
- **कार्तिक शुक्ला पञ्चमी, मङ्गलवार** (२० **नवम्बर, २००१)** : श्रीसूर्य-षष्ठी-व्रत का दूसरा दिन। जैनों की ज्ञान-पञ्चमी।
- **कार्तिक शुक्ला षष्ठी, बुधवार** (२१ **नवम्बर, २००१)** : श्रीसूर्य-षष्ठी-व्रत का तीसरा दिन, श्रीस्कन्द-षष्ठी-व्रत।
- **कार्तिक शुक्ला सप्तमी, वृहस्पतिवार** (२२ **नवम्बर, २००१)** : श्रीसूर्य- षष्ठी-व्रत-पारण।
- **कार्तिक शुक्ला अष्टमी, शुक्रवार** (२३ **नवम्बर, २००१)** : श्रीगोप-अष्टमी।
- **कार्तिक शुक्ला नवमी, शनिवार** (२४ **नवम्बर, २००१)** : अक्षय नवमी।
- **कार्तिक शुक्ला एकादशी, सोमवार** (२६ **नवम्बर, २००१)** : प्रबोधिनी एकादशी-व्रत। **जगद्धात्री-पूजा।**
- **कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी, बुधवार** (२८ **नवम्बर, २००१)** : प्रदोष-व्रत।
- **कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी, वृहस्पतिवार** (२९ **नवम्बर, २००१)** : वैकुण्ठ-चतुर्दशी-व्रत। महा-विष्णु-पूजा।
- **कार्तिक पूर्णिमा, शुक्रवार** (३० **नवम्बर, २००१)** : स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा। कार्त्तिकेय-दर्शन-ध्यान। श्रीगुरुनानक-देव-जयन्ती।

'ज्योति' की पूजा—'दीपावली'

की

हार्दिक शुभ-कामनाएँ

—ऋतशील शर्मा

सूचना

- **'चण्डी' पत्रिका** का आगामी अङ्क **'दश-महा-विद्या-तन्त्र'** (संयुक्त अङ्क— जनवरी-फरवरी-मार्च, २००२) होगा। इसमें **दश-महा-विद्याओं के रङ्गीन चित्र** भी प्रकाशित होंगे। यह अङ्क **जनवरी, २००२** के अन्त में भेजा जाएगा।
- **साधारण डाक-योजना—** जो बन्धु **'चण्डी'-पत्रिका साधारण डाक से** मँगाते हैं और जिन्होंने **'चण्डी' वर्ष ६०** हेतु अनुदान की पहली किश्त ५०/- की वी०पी० द्वारा प्रदान की है, उनकी सेवा में उक्त संयुक्त अङ्क **दूसरी किश्त ५०/- की वी०पी०** द्वारा जाएगा।
- **विशेषाङ्क-योजना—**नवम्बर के अन्त में **'मन्त्रात्मक सप्तशती', भाग २** और दिसम्बर के अन्त में **'मन्त्रात्मक सप्तशती', भाग ३** वी०पी० द्वारा जाएगा। जनवरी, २००२ के अन्त में **'दश-महा-विद्या-तन्त्र'** (संयुक्त अङ्क) वी०पी० द्वारा जाएगा।
- **डाक-व्यय वी०पी० योजना—** जनवरी, २००२ के अन्त में उक्त **संयुक्त अङ्क की वी०पी०** जाएगी।

'कौल-कल्पतरु' चण्डी
वर्ष ६०
कार्तिक-मार्गशीर्ष, 'जय'- सं० २०५८ वि०
नवम्बर-दिसम्बर, २००१

इस अङ्क में

- पर्व-पत्र (आवरण पृष्ठ)
- 'दीपावली-पर्व, 'जय' संवत् २०५८ वि० १८६
- ज्योति-पर्व— 'दीपावली' १८७
- धन-तेरस के आराध्य देव १८८
- श्रीधन्वन्तरि व्रत-कथा १८९
- श्रीधन्वन्तरि अष्टोत्तर शत-नामावली १९३
- कार्तिक 'शिव'-रात्रि के आराध्य देव १९५
- श्रीहनुमान-चालीसा १९६
- 'दीपावली' के आराध्य देव १९८
- श्रीगणेश अष्टोत्तर-शत-नामावली १९९
- श्रीमहा-लक्ष्मी-ध्यानावली २०१
- श्रीत्रैलोक्य-मङ्गल लक्ष्मी-स्तोत्र २०२
- श्रीमहा-लक्ष्मी-स्तोत्रम् २०३
- श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्र-नाम-जप-प्रयोग २०५
- 'दीपावली-पर्व' हेतु कुछ विशेष साधनाएँ
  - (१) सुख-शान्ति-दायक प्रयोग २१७
  - (२) सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे प्रयोग २२२
  - (३) एकाक्षर लक्ष्मी-बीज की साधना २२५
  - (४) श्रीमञ्जु-घोष की साधना २२६
  - (५) महा-लक्ष्मी अष्टोत्तर शत-नाम-साधना २२७
  - (६) ऋण-हरण श्रीगणेश-मन्त्र-प्रयोग २२८
  - (७) ऋण-मोचन महा-गणपति-स्तोत्र २२९
  - (८) श्रीहनुमत्-साधना २३०
  - (९) 'श्रीलक्ष्मी'-नाम-मन्त्र-साधना २३१
  - (१०) श्रीमहा-लक्ष्मी-सप्त-विंशाक्षर-मन्त्र-साधना २३६
- श्रीमहा-लक्ष्मी की सिद्ध आरती २४०

❀ 'चण्डी' में पूर्व प्रकाशित 'दीपावली'-पर्व-विषयक साधनाओं का संग्रह ❀ यह प्रति १६/-

'दीपावली'-पर्व, 'जय'-संवत् २०५८ वि० (१४ नवम्बर, २००१)

❖ पं० कृपाशङ्कर दुबे शास्त्री, ८५ए, सेक्टर वाई, बर्रा भाग २, इ० डब्लू० एस०, कानपुर

श्रीजय संवत् २०५८ वि०, शाके १९२३, **कार्तिक कृष्णा अमावास्या, बुधवार, १४ नवम्बर २००१** को **'दीपावली' महा-पर्व** है। इस दिन **'अमावास्या'**-तिथि दिन में **१ बजकर ५५ मिनट** से आरम्भ होगी और **सम्पूर्ण रात्रि** रहेगी। **'दीपावली'**-पर्व से सम्बन्धित कुछ विशेष बातें इस प्रकार हैं—

(१) **'दीपावली'**-पूजन **'वृष'** अथवा **'सिंह'**-लग्न में विशेष फल-दायी होता है। **'वृष'**-लग्न **बुधवार, १४ नवम्बर २००१** को **सायं-काल ५ बजकर १३ मिनट** से **रात्रि ७ बजकर ९ मिनट** तक है। **'सिंह'**-लग्न **बुधवार, १४ नवम्बर २००१** को **रात्रि ११ बजकर, ४१ मिनट** से **रात्रि १ बजकर, ५५ मिनट** तक है।

(२) **'दीपावली'**-पर्व के दिन **'सूर्य'** और **'चन्द्रमा'** दोनों **'तुला'**-राशि में होते हैं। **'तुला'**-राशि का स्वामी **शुक्र** है, जिनका संसार के समस्त भोग पदार्थों, धन-धान्य, वैभव से सम्बन्ध है। अतः जिन्हें संसार के भोग-पदार्थ, धन-धान्य, वैभव चाहिए, उन्हें **'दीपावली'-पूजन** अवश्य करना चाहिए।

(३) **'दीपावली' की रात्रि— 'काल-रात्रि'** कहलाती है। **'काल'-रात्रि** में अर्ध रात्रि के बाद **महा-निशा में भगवती लक्ष्मी का चिन्तन-मनन-पूजन** करने से **धन-ऐश्वर्य** के साथ-साथ **मोक्ष-लक्ष्मी** की भी प्राप्ति होती है। अतः **'दीपावली'** को **रात्रि-जागरण** कर **'जप-पूजन'** करना चाहिए।

(४) **'दीपावली'-पूजन** में **श्रीगणेश-लक्ष्मी जी** की नवीन मूर्त्ति के समक्ष **'दीप'-मालिका** जलाकर, हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए—

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुख सम्पदाम्। मम बुद्धि-प्रकाशं च, दीप-ज्योर्ति नमोऽस्तु ते।।
शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पुष्टि-वर्धनम्। आत्म-तत्त्व प्रबोधाय, दीप-ज्योर्ति नमोऽस्तु ते।।
दीपावलिर्मया दत्ता, गृहाण त्वं सुरेश्वरि! अनेन दीप - दानेन, ज्ञान-दृष्टि-प्रदा भव।।

अर्थात् **'दीप'-ज्योति** शुभ करे, कल्याण करे, आरोग्य करे, सुख-सम्पदा प्रदान करे, मेरी बुद्धि को प्रकाशित करे। **दीप-ज्योति-रूपा भगवती** को नमस्कार है। शुभ होवे, कल्याण-आरोग्य-पुष्टि का वर्धन हो, आत्म-तत्त्व को प्रबुद्ध करने हेतु **दीप-ज्योति-रूपा भगवती** को नमस्कार है। हे देवि! मेरे द्वारा अर्पित **'दीप'-पंक्ति** को आप स्वीकार करें और मेरे द्वारा सम्पन्न **'दीप'-दान** मेरे लिए ज्ञान-दृष्टि-प्रद हो।

(५) **'महा-लक्ष्मी-पूजन'** में श्वेत वस्त्र, अष्ट गन्ध, चन्दन, बिल्व-फल, आँवला, सुगन्धित इत्र का विशेष महत्त्व होता है। सुविधानुसार इन्हें अर्पित कर आनन्द प्राप्त करें।

* * *

'आत्म'-ज्योति की महत्ता जानने हेतु

ज्योति-पर्व 'दीपावली' !

❖ *श्रीऋतशील शर्मा, 'चण्डी-धाम', अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)*

'दीपावली' — ज्योति का पर्व है। इस दिन घर-घर में **'दीप'** एवं **'दीप-मालिकाएँ'** जलाई जाती हैं। यह हमारा प्राचीन प्रधान पर्व है। पुराणों में **भगवान् राम, भगवान् कृष्ण** के समय में इसके मनाए जाने का स्पष्ट उल्लेख है। वैसे भी, अपने देश **'भारत'** का अर्थ ही है — **''प्रकाश (ज्ञान) में आसक्त देश।''** अतः **ज्योति-पर्व 'दीपावली'** हम सभी के लिए **'महा-पर्व'** है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

'ज्योति की उपासना' विश्व को भारत की अनूठी देन है। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** — हमारे देश की **'आदि-प्रार्थना'** है, जिसका अर्थ है मुझे **'अन्धकार'** अर्थात् अज्ञान से मुक्त कर **'ज्योति'** अर्थात् ज्ञान-शक्ति से युक्त करें। वस्तुतः इस **'आदि-प्रार्थना'** का स्मरण कराने के लिए ही हमारे ऋषि-मुनियों ने प्रति-वर्ष **'दीपावली'** का आयोजन किया है। दुःख की बात है कि आज हम अपनी **'आदि-प्रार्थना'** को ही भूले बैठे हैं! हमें **'ज्योति - स्वरूपा परम ज्ञान-शक्ति'** का तनिक भी ध्यान नहीं है। हमें ध्यान है, तो केवल **'आडम्बर'** अथवा **'झूठी शान'** का! इसी का यह दुष्परिणाम है कि सब कुछ होते हुए भी हमसे हमारा **'कल्याण'** छिन गया है और हम दुःखी तथा सङ्कट-ग्रस्त हैं!

'कल्याण' का एक ही मार्ग है और वह है— **'ज्योति' की उपासना, 'ज्योति' के प्रति समर्पण।** सभी साधनाओं का यह सार है। इसीलिए **'साधना'** के अन्त में कहा जाता है— **''ॐ सर्वान्तरात्म - निलये! स्वान्तर्ज्योति-स्वरूपिणि!..... गृहाणान्तर्जपम्, नमोऽस्तु ते।।''**

जब तक हमारी **'साधना'** — **'आत्म-ज्योति' के प्रति समर्पित** नहीं होती, तब तक वह **'साधना'** कल्याण-कारी नहीं हो सकती। समस्त सांसारिक या आध्यात्मिक उपलब्धियाँ इसी **'आत्म-ज्योति' की कृपा** पर निर्भर हैं। **'आत्म-ज्योति' की महत्ता** को जानना ही सभी साधनाओं का मूल है। हमें इसे पाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए। जितना अधिक हम इसे जानेंगे, उतना ही अधिक हमारा **'कल्याण'** होगा।

इस प्रकार **'आत्म-ज्योति'-स्वरूपा 'लक्ष्मी'**— प्रधान शक्ति हैं। इनके बिना जगत् का **'कल्याण'** सम्भव नहीं। हम सभी को इनका **चिन्तन - मनन** सभी अवस्थाओं में और **सभी देवी-देवताओं के पूजन - ध्यान** में करना चाहिए। **'ज्योति-स्वरूपा' आत्म-शक्ति** की महत्ता को स्पष्ट करने के लिए **'चण्डी'-पत्रिका** पूरी तरह से कृत-सङ्कल्प है। प्रस्तुत **'दीपावली'-अङ्क** में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपको जानने-समझने के लिए प्रचुर सामग्री मिलेगी। आवश्यकता यह है कि हम **'स्वार्थ'** अर्थात् **क्षणिक लाभ-प्राप्ति** से ऊपर उठें और **'मूल आत्म-शक्ति'** अर्थात् प्रकृत सम्पत्ति— **'श्री'** को प्राप्त करें।

'लालसा'- रूपी धन या सम्पत्ति से चित्त की दरिद्रता दूर नहीं होती। ज्यों-ज्यों सम्पत्ति या धन आता है, त्यों-त्यों **'लालसा'** बढ़ती है। आज का युग इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके विपरीत, **'आत्म-ज्योति' का ज्ञान** होने पर अथवा **'आत्म-ज्योति' की प्राप्ति** पर **'लालसा'** नहीं रह जाती और भारी-से-भारी विपरीत परिस्थितियों में भी चित्त विचलित नहीं होता। यही **'प्रकृत सम्पत्ति'** है। इसे प्राप्त करने के लिए हमें कटि-बद्ध होकर प्रयत्न करना चाहिए। इसकी प्राप्ति पर **'भारत'** पुनः **'हिरण्य-मय'— 'सोने की चिड़िया'** बन सकता है।

महा-विष्णु भगवान् धन्वन्तरि

❖ *'ब्रह्मर्षि' पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, 'आयुर्वेद-पञ्चानन'*

आज हम सच्चा **'आनन्द'** मनाना भूल गए हैं, अतः **'आनन्द'** भी हमसे दूर होता जा रहा है। हमारे समाज-प्रवर्त्तक लोग अपने कर्तव्य में पहले जैसे दक्ष नहीं रहे। मनुष्य स्वभाव से विस्मृति-शील होता है, ज्यों-ज्यों कोई घटना पुरानी पड़ती जाती है, त्यों-त्यों वह भूलती जाती है। यही कारण है कि आज **भगवान् विष्णु** के अवतारों में से **'राम'** और **'कृष्ण'** के अवतारों की ही पूजा-अर्चा रह गई है। **मत्स्य, कूर्म, वाराह** आदि अवतारों को हम लोग भूल गए हैं! **'नृसिंह'** और **'वामन'**-अवतारों का जन्म, व्रत, उत्सव बहुत कम लोग मनाते हैं। **'परशुराम-जयन्ती'** (अक्षय तृतीया - वैशाख शुक्ला तृतीया) को भी बहुत थोड़े लोग मनाते हैं।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (अमान्त मास माननेवाले दाक्षिणात्यों के हिसाब से आश्विन कृष्णा त्रयोदशी) को 'धन-तेरस' के नाम से हम लोग जानते-मानते हैं, किन्तु हम यह नहीं जानते कि यह **भगवान् धन्वन्तरि की पूजा या अर्चा का पर्व** है! जिसकी पूजा करते हैं, जब उसी को नहीं जानते, तब हमें **'आनन्द' - रूपी फल की प्राप्ति** कैसे हो सकती है? इस दिन, **भगवान् धन्वन्तरि** जगत् के कल्याण के लिए हाथों में **'अमृत-कलश'** लेकर अवतरित हुए थे। इसके प्रतीक-स्वरूप आज भी हम लोग इस दिन कुछ-न-कुछ नवीन पात्र खरीदते हैं, परन्तु हम यह नहीं जानते कि यह **'भगवान् धन्वन्तरि के कलश' का प्रतीक है और इसके द्वारा उनकी पूजा करनी चाहिए!**

धन्वन्तरि भगवान् सृष्टि - मात्र के आराध्य देवता हैं। जो मनुष्य **भगवान् धन्वन्तरि का नित्य स्मरण-पूजन** करता है, वह आरोग्य-सम्पन्न, दृढ़ और बली होता है। **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को भगवान् धन्वन्तरि की विधि-वत् पूजा** करनी चाहिए। शास्त्रों में नारद मुनि कहते हैं— **''जिस घर में कम-से-कम वर्ष में एक बार भगवान् धन्वन्तरि की पूजा नहीं होती, वह घर नहीं, शूकरों का निवास-स्थल है। अथवा, जिस घर में भगवान् धन्वन्तरि की पूजा नहीं होती, वह ऐश्वर्य से शून्य होता है।.....''** अतः **कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी** को हम सभी को **धन्वन्तरि भगवान् की पूजा** करनी चाहिए। यदि सम्भव हो, तो **कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी** से लेकर **कार्तिक शुक्ला नवमी (अक्षय नवमी)** तक उत्सव करना चाहिए। इससे हम लोगों को **आरोग्य, आयुष्य और सुख की प्राप्ति** होगी, इसमें सन्देह नहीं।

भगवान् धन्वन्तरि की पूजा-विधि **'दीपावली की पूजा-विधि'** (मूल्य १५-०० रु०) पुस्तक में प्रकाशित है। यहाँ श्रीगरुड़-पुराणोक्त **'रोग-नाशिनी श्रीधन्वन्तरि व्रत-कथा'** दी जा रही है। साथ ही, **'भगवान् धन्वन्तरि की अष्टोत्तर-शत-नाम-पूजा'** भी दी जा रही है, जिसके द्वारा हम बहुत ही कम समय में **भगवान् धन्वन्तरि** की मानसिक पूजा, बाह्य-पूजा, तर्पण-हवन, नाम-जप आदि कर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

श्री धन्वन्तरि व्रत-कथा

पहला अध्याय

सनकादिक मुनियों ने सूत जी से कहा — हे सूत महा-मुने! आपने भगवान् धन्वन्तरि की पूजा-विधि का विस्तार-पूर्वक वर्णन किया, किन्तु इसे सुनने पर भी हमें तृप्ति नहीं हुई। अतः **श्री धन्वन्तरि का माहात्म्य** अधिक विस्तार से बताइए।

मुनि - श्रेष्ठ सूत जी ने कहा — हे मुनियों! आप पाप - विनाशिनी कथा को सुनिए। इस कथा को सुनने से सभी रोगों का नाश होता है—

एक समय नारद जी सभी लोगों के कल्याण की इच्छा से समुद्र - द्वीप - पर्वत - सहित सम्पूर्ण पृथ्वी में भ्रमण कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सभी लोगों को विविध रोगों से दुःखी देखा। यह देखकर नारद जी चिन्तित हुए और वहाँ से 'स्वर्ग' जा पहुँचे।

स्वर्ग में इन्द्र आदि देवता भी रोगी हो रहे थे। यह देखकर नारद जी की चिन्ता और बढ़ गई। चिन्ता करते हुए वे 'वैकुण्ठ' में पहुँचे।

'वैकुण्ठ' में नारद जी ने **शङ्ख - चक्र - अमृत - कलश - धारी** और **अभय - हस्त धन्वन्तरि विष्णु** को देखा। श्री (लक्ष्मी), भू (पृथ्वी) और नीला देवी उनकी चरण - सेवा कर रही थीं। ऐसे महात्मा धन्वन्तरि-रूपी श्री विष्णु को नारद जी ने भक्ति - पूर्वक प्रणाम किया और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे।

श्री नारद जी बोले — हे देवों के देव! जगन्नाथ! भक्तों पर दया करनेवाले, दीन - बन्धु, दया - सागर, जगत् की रक्षा में तत्पर! आप मुझे शरणागत जानकर सन्तुष्ट कीजिए।

हे भगवन्! मैंने पृथ्वी आदि सभी लोकों में पर्यटन किया और वहाँ के निवासी जनों को नाना रोगों से दुःखी पाया। किसी को ज्वर ने गिराया है, तो किसी को राज-यक्ष्मा ने धर दबाया। कोई अतिसार, श्वास, खाँसी, संग्रहणी और पाण्डु - रोगादि से पीड़ित है। कोई वात - रोगों से पीड़ित है। कोई फोड़े, गिल्टी, प्लेग आदि से युक्त सन्निपात रोग और प्रमेहादि रोगों से घेरे गए हैं।

इस प्रकार लोग अनेक रोगों से ग्रस्त और दुःखी हैं। उन्हें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ और बारम्बार मैंने चिन्ता की। मैंने सोचा कि ये लोग कैसे नीरोग होंगे और प्रसन्न होंगे? इसी चिन्ता से मन में व्याकुल होकर मैं आपकी शरण में आया हूँ।

हे विश्वात्मन्! शरणागत भूम्यादि लोकों की आप रक्षा कीजिए। त्रैलोक्य में आपके अतिरिक्त इनका कोई रक्षक नहीं है।

भगवान् श्री विष्णु नारद जी के उक्त वचनों को सुनकर गम्भीर वाणी से बोले — हे मुने! आप भय न कीजिए। मैं **'आदि - धन्वन्तरि'** इन्द्र से आयुर्वेद प्राप्त कर पुनः अवतार लेकर सभी लोकों को नीरोग करूँगा। मैं कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, गुरुवार, हस्त नक्षत्र के समय अवतार लेकर **'आयुर्वेद' का उद्धार** करूँगा। इसमें सन्देह न करो। ॥ **श्री धन्वन्तरि - व्रत - कथा का पहला अध्याय॥**

दूसरा अध्याय

भगवान् विष्णु के उक्त वचनों को सुनकर **नारद मुनि अति प्रसन्न हुए और हर्ष से बोले**— हे भगवन्! आप **'धन्वन्तरि - पूजा' की विधि** बताइए। **'धन्वन्तरि - पूजा'** में कौन - सा ध्यान या विधान किया जाए? उसका नियम क्या है? उसका फल क्या है? किस समय, किसने उस पूजा को किया है? पूजा में क्या - क्या चीजें चाहिए? हे देव - देवेश्वर! लोकों पर अनुग्रह करने की इच्छा से कृपा - पूर्वक यह सब मुझे बताइए।

श्री भगवान् ने कहा — हे मुने! तुमने लोकोपकार की इच्छा से पूछा है। अतएव तुमसे 'पाप-नाशिनी, रोग-नाशिनी कथा' कहता हूँ।

धनगुप्त राजा के निमित्त **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी** गुरुवार हस्त नक्षत्र के समय मैं रात्रि के प्रथम प्रहर में गुप्त धन के समान **'धन्वन्तरि'** नाम से अवतीर्ण होता हूँ। अतएव वह दिन संसार में **'धन - त्रयोदशी' (धन - तेरस)** नाम से प्रसिद्ध होगा। यह तिथि सभी कामनाओं को देनेवाली है।

नारद जी ने पूछा — हे भगवन्! कृपया विस्तार - पूर्वक बताइए कि बड़-भागी **'धनगुप्त'** कहाँ हुआ और आपके दर्शन की प्राप्ति के लिए उसने कौन - सा व्रत किया था और हे दया - सागर नारायण! उसने आपका पूजन क्यों किया था?

श्री भगवान् ने कहा — पहले अवन्तीपुर (उज्जैन) में 'धनगुप्त' नामक राजा धर्म-मार्ग से प्रजा का पालन करनेवाला हुआ था। वह सभी लोगों को प्यारा, उदार - चित्त था। उसे क्षय रोग हो गया। उससे वह दिन - रात पीड़ित होने लगा। पीड़ा की निवृत्ति के लिए उसने जप, होम, नाना प्रकार की औषधियाँ कीं, परन्तु नीरोग न हुआ। तब वह खिन्न होकर विलाप करने लगा।

राजा की स्त्री त्रिलोक में प्रसिद्ध सुशीला, पतिव्रता, सदाचारिणी थी। उसने भी पति के मङ्गल की आकांक्षा से अनेक नियम, उपवास आदि किए, पर इससे भी राजा नीरोग न हुआ और अन्त में वह स्त्री भी अतीसार रोग से रोगिणी हो गई।

हे मुने! उस राजा से उस पतिव्रता स्त्री के पाँच पुत्र हुए। वे क्रमशः आमवात, प्लीहा, कुष्ठ, खाँसी और श्वास से पीड़ित हुए। उनको भी रोग से छुटकारा न मिला। राजा और रानी अपने पुत्रों को रोगार्त देखकर अत्यन्त दुःखी हुए।

स्त्री-पुत्रों को रोग के सागर से मुक्त कराने की इच्छा से चिन्तित राजा घोर वन को चला गया। वन में राजा ने महा -मुनि 'भरद्वाज' को बैठे देखा। राजा ने उन्हें भक्ति - पूर्वक प्रणाम किया और अपना दुःख बताया। महा - मुनि भरद्वाज से राजा ने रोग - कष्ट - निवारण हेतु उपाय पूछा।

भरद्वाज मुनि ने कहा — हे राजन्! तुम्हारा वृत्तान्त मैंने जान लिया। तुम अति शीघ्र **महा - विष्णु**

'धन्वन्तरि' की शरण में जाओ। मनुष्य उनके दर्शन मात्र से घोर दुस्तर रोगों से मुक्त हो जाता है।

राजा ने भरद्वाज मुनि से उक्त बात सुनकर उनसे पूछा — हे महात्मन्! आप कृपा कर उनकी आराधना-विधि मुझे भली - भाँति बताइए।

ऋषि भरद्वाज ने कहा — हे महाभाग राजन्! उस विधि को मैं कहता हूँ, सावधान - चित्त से सुनिए।

कार्त्तिक कृष्णा त्रयोदशी (धन-तेरस) के शुभ दिन, प्रातः - काल उठकर शौच - मुख - मार्जन आदि से निवृत्त होकर 'स्नान' करे। शुद्ध वस्त्र आदि धारण कर गुरु से प्राप्त उपदेशानुसार भगवान् धन्वन्तरि का ध्यान करे। फिर निम्न मन्त्र पढ़कर 'व्रत' का प्रारम्भ करे —

'करिष्यामि व्रतं देव! त्वद् - भक्तस्त्वत्- परायणः। श्रियं देहि जयं देहि, आरोग्यं देहि मे प्रभो!'

अर्थात् हे देव! मैं आपका भक्त हूँ, आप में चित्त लगाकर आपका व्रत करूँगा। आप मुझे लक्ष्मी दीजिए, विजय दीजिए, आरोग्य दीजिए।

देव - देव धन्वन्तरि से उक्त प्रार्थना कर, उनकी षोडशोपचारों से पूजा करे। (षोडशोपचार पूजा - विधि हेतु देखिए - 'दीपावली की पूजा - विधि', मूल्य १०-०० रुपए।

'पूजा' करने के बाद तेरह धागों का सूत्र लेकर तेरह गाँठवाला **'दोरक'** बनाए। इस **'दोरक'** की भक्ति - पूर्वक पूजा करे और निम्न - लिखित मन्त्र पढ़कर पुरुषों के दाहिने हाथ में तथा स्त्रियों के बाँएँ हाथ में बाँधे —

धन्वन्तरे! महा - भाग! जरा - रोग - निवारक!
दोर - रूपेण मां पाहि, स - कुटुम्बं दया - निधे!
आधि - व्यधि - जरा - मृत्यु - भयादस्मादहर्निशम्,
पीड्यमानं देव - देव! रक्ष मां शरणागतम्।।

अर्थात् — हे धन्वन्तरे! हे महा - भाग! आप जरा (बुढ़ापा) और रोग के मिटानेवाले हैं। इसलिए हे दया - निधे! आप इस सूत्र - रूप से स - कुटुम्ब मेरी रक्षा कीजिए। मैं दिन - रात आधि (मानसिक दुःख) और व्याधि (रोग), जरा (बुढ़ापा) अर्थात् आयु - विषयक टेढ़ी कमर, सन्धि - पीड़ा, क्षुधा - नाश, अरुचि आदि त्रास - दायी उपद्रवों तथा मृत्यु (कु - समय अपघातादि से मरना) के भय से त्रस्त हो रहा हूँ। हे देव - देव! शरण में आए हुए मेरी अब आप रक्षा करें।

सूत्र - बन्धन के बाद 'देव - देव धन्वन्तरि' को भक्ति - पूर्वक **'अर्घ्य'** निवेदन करे। **अर्घ्य** प्रदान करने का मन्त्र इस प्रकार है —

जातो लोक - हितार्थाय, आयुर्वेदाभिवृद्धये।
जरा - मरण - नाशाय, मानवानां हिताय च।।
दुष्टानां निधनायाथ, जात्त धन्वन्तरे प्रभो!
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं, देव - देव कृपा-कर।।

अर्थात् हे देव - देव, दया-कारी धन्वन्तरि! आप लोकापकार के लिए, आयुर्वेद की अभिवृद्धि के निमित्त, मनुष्यों के हित तथा जरा - मरण का नाश करने के लिए अवतरित हुए हैं। मैं आपको अर्घ्य प्रदान करता हूँ। इसे स्वीकार कीजिए।

अर्घ्य प्रदान करने के बाद ब्राह्मण को बायन - दान करे। **'बायन' - दान** के लिए गेहूँ के आटे

में दूध, घी डालकर पकाए। पकने पर शक्कर डाले। केसर, कपूर, इलायची, लौंग जावित्री डालकर इस सिद्ध नैवेद्य को भगवान् को अर्पित करे। आधा 'प्रसाद' वेदज्ञ ब्राह्मण को अर्पित करे और आधा स्त्री-पुत्रादि सहित स्वयं प्रसाद-स्वरूप ग्रहण करे। हे राजन्! इस विधि से व्रत करने से साक्षात् धन्वन्तरि स्वयं प्रकट होकर तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध करेंगे। इतनी कथा सुना कर भरद्वाज मुनि ने विश्राम लिया।

।। श्री धन्वन्तरि - व्रत - कथा का दूसरा अध्याय ।।

तीसरा अध्याय

सूत जी बोले — हे मुनि-वरों! राजा धनगुप्त ने मुनि की आज्ञा पाकर उनके कहे अनुसार तेरह वर्ष पर्यन्त भक्ति-पूर्वक 'व्रत' किया।

एक दिन 'व्रत - समाप्ति' के अवसर पर साक्षात् धन्वन्तरि प्रगट हुए। राजा ने साष्टाङ्ग प्रणाम कर उनकी स्तुति की। भक्ति-पूर्वक की गई स्तुति स्वीकार कर भगवान् धन्वन्तरि ने कहा — 'हे राजन्! अब तुम डरो मत, तुम्हारा मङ्गल होगा। तुम हमसे वर माँगो।

राजा ने यह सुनकर उन्हें पुनः साष्टाङ्ग प्रणाम किया और उनकी स्तुति की —

धन्वन्तरे! नमस्तुभ्यं, नमो ब्रह्माण्ड - नायक!
सुरासुराराधितांघ्रे, नमो वेदैक - गोचर!
आयुर्वेद - स्वरूपाय, नमस्ते जगदात्मने।।१
प्रपन्नं पाहि देवेश! जगदानन्द - दायक!
दया - निधे महा -देव! त्राहि मामपराधिनम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगैः, पीड़ितं स - कुटुम्बिनम्।।

अर्थात् हे धन्वन्तरे! ब्रह्माण्ड - नायक! आपको नमस्कार। देव - दैत्यों से पूज्य-चरण! केवल वेद के ही जानने योग्य आपको नमस्कार। आयुर्वेद - स्वरूप - जगत् के अन्तर्यामी आपको नमस्कार। हे जगत् के सुखदायी देव - देव! दया - सागर, महा - देव! आप मुझ शरणागत अपराधी की रक्षा करें। मैं कुटुम्ब सहित जन्म - मृत्यु जरा आदि रोगों से पीड़ित हूँ।

भगवान् धन्वन्तरि ने यह स्तुति सुनकर मेघ - गर्जन के समान गम्भीर वाणी से मुस्कुराते हुए कहा- हे महा-राज! ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हूँ। अब तुम हमसे वर माँग लो।

राजा बोले — हे देव! यदि आप प्रसन्न हैं, तो सबसे पहले स्त्री - पुत्रों सहित मुझे आरोग्य दीजिए।

यह प्रार्थना सुन कर भगवान् ने कहा — राजन्! तुमने जो प्रार्थना की है, वह पूर्ण होगी। इसके अतिरिक्त भी मैं वर देता हूँ। उसे सावधान होकर सुनो—

तुमने जिस प्रकार यह 'व्रत' किया है, इसी तरह जो 'व्रत' करेंगे, उनको आरोग्य प्रदान कर मैं उन्हें अपनी स्थिर भक्ति दूँगा।

सूत जी बोले — भगवान् धन्वन्तरि यह कहकर अन्तर्धान हो गए और राजा धनगुप्त अपनी पुरी में लौट गया। राजा नित्य स्त्री - पुत्रों सहित अमृत - पाणि धन्वन्तरि की स्तुति करने लगा। उसने पृथ्वी-लोक में नाना प्रकार के सुख भोगे और अन्त में भगवान् धन्वन्तरि की कृपा से मोक्ष - पद प्राप्त किया। इस प्रकार मैंने तुम लोगों को **भगवान् धन्वन्तरि की जन्मोत्सव-कथा** सुनाई। इसके सुनने से सभी पापों का नाश होता है। **।।श्री धन्वन्तरि - व्रत - कथा तीसरा अध्याय।।**

❑

भगवान् धन्वन्तरि अष्टोत्तर-शत-नाम-पूजा

१ ॐ अमृत-वपुषे नमः
२ ॐ धर्म-ध्वजाय नमः
३ ॐ धरा-वल्लभाय नमः
४ ॐ धीराय नमः
५ ॐ धिषण-वन्द्याय नमः
६ ॐ धार्मिकाय नमः
७ ॐ धर्म-नियामकाय नमः
८ ॐ धर्म-रूपाय नमः
९ ॐ धीरोदात्त-गुणोज्ज्वलाय नमः
१० ॐ धर्म-विदे नमः
११ ॐ धराधर-धारिणे नमः
१२ ॐ धात्रे नमः
१३ ॐ धातृ-गर्व-भिदे नमः
१४ ॐ पुण्य-पुरुषाय नमः
१५ ॐ धाराधर-रूपाय नमः
१६ ॐ धार्मिक-प्रियाय नमः
१७ ॐ धार्मिक-वन्द्याय नमः
१८ ॐ धार्मिक-जन-ध्याताय नमः
१९ ॐ धनदादि-समर्चिताय नमः
२० ॐ धन्विने नमः
२१ ॐ धर्म-नारायणाय नमः
२२ ॐ आदित्य-रूपाय नमः
२३ ॐ अमोघाय नमः
२४ ॐ धिषण-पूज्याय नमः
२५ ॐ धिषणाग्रज-सेव्याय नमः
२६ ॐ धिषण-वन्द्याय नमः
२७ ॐ धिषणा-दायकाय नमः
२८ ॐ धार्मिक-शिखा-मणये नमः
२९ ॐ धी-प्रदाय नमः
३० ॐ धी-रूपाय नमः
३१ ॐ ध्यान-गम्याय नमः
३२ ॐ ध्यान-ध्यात्रे नमः
३३ ॐ ध्यातृ-ध्येय-पदाम्बुजाय नमः
३४ ॐ धूप-दीपादि-पूजा-प्रियाय नमः
३५ ॐ धूमादि-मार्ग-दर्शकाय नमः
३६ ॐ तेजोकृत-अग्नि-रूपाय नमः
३७ ॐ प्रभञ्जन वायु-रूपाय नमः
३८ ॐ सौम्याय चन्द्रमसे नमः
३९ ॐ बृहस्पति-प्रसूता-ओषध-द्रव्य-पतये नमः
४० ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः
४१ ॐ धर्म-मार्गे विघ्न-कृत्-सूदनाय नमः
४२ ॐ धनुर्वातादि-रोगघ्नाय नमः
४३ ॐ धारणा-मार्ग-दर्शकाय नमः
४४ ॐ ध्यातृ-पाप-हराय नमः
४५ ॐ वरदाय धन-धान्य-प्रदाय नमः
४६ ॐ धेनु-रक्षा-धुरीणाय नमः
४७ ॐ धरणी-रक्षण-धुरीणाय नमः
४८ ॐ ओजस्तेजो-द्युति-धराय नमः

४९ ॐ मोहिनी-रूपाय नमः
५० ॐ समुद्र-मन्थनोद्भवाय नमः
५१ ॐ धर्म-धुरन्धराय नमः
५२ ॐ तुष्टाय पुष्टाय नमः
५३ ॐ वेद्याय वैद्याय नमः
५४ ॐ सोमपोऽमृतपः सोमाय नमः
५५ ॐ पुरुष-पुरुषोत्तमाय नमः
५६ ॐ वाचस्पतये नमः
५७ ॐ भेषजे भिषजे नमः
५८ ॐ महा-कृतवे नमः
५९ ॐ महा-यज्ञाय नमः
६० ॐ हविषे महा-हविषे नमः
६१ ॐ लोक-बन्धवे माधवाय नमः
६२ ॐ धनगुप्त-वरदाय भक्त-वत्सलाय नमः
६३ ॐ इन्द्र-कर्मणे नमः
६४ ॐ पावनाय नमः
६५ ॐ अमृताशाय नमः
६६ ॐ अमृत-वपुषे नमः
६७ ॐ सर्वतो सुखाय नमः
६८ ॐ न्यग्रोधौदुम्बराय नमः
६९ ॐ अश्वत्थाय नमः
७० ॐ अणवे नमः
७१ ॐ वृहते नमः
७२ ॐ धनुर्धराय नमः
७३ ॐ धनुर्वेदाय नमः
७४ ॐ प्रिय-कृते प्रीति-वर्धनाय नमः
७५ ॐ ज्योतिषे नमः
७६ ॐ सुखदाय नमः
७७ ॐ स्वस्तिने स्वस्ति-कृते नमः
७८ ॐ कुण्डलिने नमः
७९ ॐ चक्रिणे विक्रमिणे नमः
८० ॐ शब्द-सहाय नमः
८१ ॐ दुःस्वप्न-नाशनाय नमः
८२ ॐ आधार-निलयाय नमः
८३ ॐ प्राणाय प्राणदाय नमः
८४ ॐ प्राण-निलयाय नमः
८५ ॐ प्राण-धृते नमः
८६ ॐ प्राण-जीवनाय नमः
८७ ॐ तत्त्वाय तत्त्व-विदे नमः
८८ ॐ जन्ममृत्यु-जरागाय नमः
८९ ॐ यज्ञाय महेज्याय नमः
९० ॐ क्रतवे यज्ञ-वाहनाय नमः
९१ ॐ यज्ञ-भृते नमः
९२ ॐ यज्ञाय यज्ञाङ्गाय नमः
९३ ॐ ईज्याय यज्ञिने नमः
९४ ॐ यज्ञ-भुजे नमः
९५ ॐ यज्ञ-साधनाय नमः
९६ ॐ यज्ञान्न-कृते नमः
९७ ॐ यज्ञ-गुह्याय नमः
९८ ॐ साम-गानाय नमः
९९ ॐ पाप-नाशनाय नमः
१०० ॐ भरद्वाज-प्रियाय नमः
१०१ ॐ महोत्साहाय नमः
१०२ ॐ वर्धमानाय नमः
१०३ ॐ काशिराज-धन्वन्तरये नमः
१०४ ॐ दिवोदास-धन्वन्तरये नमः
१०५ ॐ श्री-धारामृत-हस्ताय नमः
१०६ ॐ धृतामृत-कलश-कराय नमः
१०७ ॐ लक्ष्मी-सहोदराय
१०८ ॐ आधि-व्याधि-विनाशिने नमः

रुद्रात्मक श्रीहनुमान् जी

कार्तिक-मास की **'शिव'-रात्रि** अथवा 'नरक'-चतुर्दशी **'श्रीहनुमान्-जयन्ती'** का पावन पर्व है। इस दिन सायं-काल **'धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष'**-रूपी चार बत्तियों का 'दीपक'— **'यम'-देवता** के लिए जलाया जाता है। इस दिन भक्त-गण **'श्रीहनुमान-चालीसा'** आदि **सिद्ध स्तुतियों का पाठ** भी करते हैं। यहाँ **'श्रीहनुमान-चालीसा'** का प्रामाणिक पाठ दिया जा रहा है। यदि कोई विशेष कामना हो, तो **'सङ्कल्प'**-पूर्वक **'श्रीहनुमान-चालीसा का सम्पुटित पाठ'** करना चाहिए। कामना की पूर्ति हेतु इस दिन से **४० दिन तक नित्य ११ बार 'सम्पुटित पाठ'** करना चाहिए। विविध कामनाओं हेतु **'श्रीहनुमान-चालीसा'** के साथ सम्पुटित की जानेवाली चौपाइयाँ इस प्रकार हैं—

१. कुमति के नाश और सुमति के लिए—

महावीर विक्रम बजरङ्गी। कुमति निवार सुमति के सङ्गी।

२. बल, विद्या, बुद्धि की प्राप्ति तथा मनो-विकार दूर करने के लिए—

बुद्धि-हीन तनु जानि के, सुमिरों पवन-कुमार।
बल-बुद्धि-विद्या देहु मोहि, हरहु क्लेश विकार।।

३. कठिन रोग से मुक्ति के लिए—

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
लाय सजीवन लखन जियाए। श्रीरघुवीर हरषि उर लाए।। अथवा
नासे रोग हरे सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत वीरा।।

४. सङ्कट, बाधा से मुक्ति के लिए—

सङ्कट ते हनुमान छुड़ावे। मन क्रम वचन ध्यान जो लावे।। अथवा
सङ्कट कटै मिटे सब पीरा। जो सुमिरे हनुमत बलबीरा।।

५. अभिलषित कार्य की सिद्धि के लिए—

सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन-फल पावै।।

६. भूत, प्रेत-बाधा दूर करने के लिए—

भूत-पिसाच निकट नहीं आवे। महा-वीर जब नाम सुनावे।।

७. कठिन कार्य की सिद्धि के लिए—

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

कार्य अथवा उद्देश्य के अनुसार उक्त अभीष्ट चौपाइयों के साथ **'श्रीहनुमान-चालीसा'** का **'सम्पुट-पाठ'** करने से सफलता शीघ्र मिलती है। **'श्रीहनुमान - चालीसा'** का पाठ इस प्रकार करे—

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

श्रीहनुमान-चालीसा

॥दोहा॥

श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरणौं रघुवर बिमल यस, जो दायक फल चारि॥
बुद्धि-हीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन - कुमार।
बल-बुधि - विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार॥

जय हनुमान ज्ञान-गुण-सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम-दूत अतुलित बल-धामा। अञ्जनि-पुत्र पवन - सुत नामा॥
महा - बीर बिक्रम बजरङ्गी। कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥
कञ्चन- बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ छाजै॥
सङ्कर-सुवन केसरी - नन्दन। तेज प्रताप महा जग - बन्दन॥
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम - काज करिबे को आतुर॥
प्रभु-चरित्र सुनिबे को रसिया। राम - लषन-सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म-रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट- रूप धरि लङ्क जरावा॥
भीम-रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लषन जियाए। श्रीरघुवीर हरषि उर लाए॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद - सहित अहीसा॥
यम कुबेर दिग-पाल जहाँ ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज - पद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना। लङ्केश्वर भए सब जग जाना॥
युग सहस्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे।। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत-पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
सङ्कट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन-फल पावै।।
चारों युग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु-सन्त के तुम रखवारे। असुर-निकन्दन राम-दुलारे।।
अष्ट-सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन्ह जानकी माता।।
राम - रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को भावै। जन्म-जन्म के दुख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
सङ्कट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बल-बीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
यह सत बार पाठ कर जोई। छूटइ बन्दि महा-सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान-चालीसा। होय सिद्धि, साखी गौरीसा।।
'तुलसीदास' सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

पवन- तनय सङ्कट हरन, मङ्गल-मूरति रूप।
राम-लषन-सीता-सहित, हृदय बसहु सुर-भूप।।

★ ★ ★

'दीपावली' के आराध्य देव

'दीपावली'-पर्व की मुख्य-पूजा— **'ज्योति की पूजा'** है। **पूर्ण-पर-ब्रह्म परमात्मा** की अग्नि-शिखा **(दीप-शिखा)** के रूप में **'आद्या'** हैं। **'पर-ब्रह्म'** की अन्य दीप-शिखाएँ **त्रि-शक्तियों— 'महा-लक्ष्मी, महा-काली, महा-सरस्वती', 'महा-विष्णु धन्वन्तरि, रुद्रात्मक हनुमान्, सच्चिदानन्दात्मक गणेश', 'यम-इन्द्र-कुबेर'** आदि के रूप में है। इस प्रकार **'दीपावली'** में **'ज्योति-पूजन'** अथवा **'ज्योति-चिन्तन-मनन'** की ही प्रधानता है।

कीर्तिर्मतिः स्मृति-गती करुणा दया त्वम्।
श्रद्धा धृतिश्च वसुधा कमला जया च॥
पुष्टिः कलाऽथ विजया गिरिजा जया त्वम्।
तुष्टिः प्रभा त्वमसि बुद्धिरुमा रमा च॥

उक्त पद्म में **माता कमला (लक्ष्मी)** का नाम **वसुधा** और **जया** के बीच में आया है। इसका तात्पर्य यह है कि **माता लक्ष्मी** पृथिवी पर विजय प्रदान करनेवाली हैं। इनका सेवक अर्थात् **माता लक्ष्मी** का भक्त **वसुधा** और **जय—** इन दोनों को प्राप्त करता है। अथवा, एक हाथ से **'वसु'** अर्थात् धन और दूसरे हाथ से **'जया' (विजयिनी शक्ति)** को प्राप्त करता है। इसीलिए **'दीपावली'-पर्व** पर **'ज्योति'-पूजा** के रूप में हमारे यहाँ घर-घर **'लक्ष्मी'-पूजन की प्रथा** है।

'वसु' (धन, ऐश्वर्य) एवं **'जय'** (विजयिनी शक्ति) के साथ-साथ आनन्द प्रदान करनेवाले **'विघ्नेश्वर'** की पूजा भी आवश्यक है। यही कारण है कि तन्त्रों में **भगवान् गणेश** का **सिद्धि-लक्ष्मी** से आलिङ्गित ध्यान का स्पष्ट उल्लेख है—

सिद्धि-लक्ष्मी-समाश्लिष्ट-पार्श्वमर्द्धेन्दु-शेखरम्,
आरक्त-वर्ण मातु-लुङ्ग-गदा-पुण्ड्रेक्षु-कार्मुकम्।
शूलं सुदर्शनं शङ्खं नीलोत्पलं धान्य-मञ्जरीम्,
निज-दन्ता रत्न-घण्टा परिन्द्र-पाण्येकादशकम्॥

अर्थात् बगल में सिद्धि-लक्ष्मी से आलिङ्गित, मस्तक पर अर्द्ध-चन्द्र धारण करनेवाले, रक्त-वर्ण गणेश जी अपने ग्यारह हाथों में १ मातुलुङ्ग, २ गदा, ३ लाल ईख का धनुष, ४ शूल, ५ सुदर्शन चक्र, ६ शङ्ख, ७ नील-कमल, ८ धान्य-मञ्जरी, ९ अपना दाँत, १० रत्न-जटित घण्टा, ११ पलाश-दण्ड लिए हैं।

संक्षेप में, **'दीपावली'-पर्व** के आराध्य देव **'गणेश-लक्ष्मी-कुबेर-इन्द्र-हनुमान्-मञ्जघोष', 'महा-काली, महा-लक्ष्मी, महा-सरस्वती'** सभी **'ज्योति'**-रूप में एक दूसरे से समाश्लिष्ट हैं। अतएव स्व-कल्याण की कामना से मन से सभी का **चिन्तन-मनन-पूजन** कर **किसी एक की विशिष्ट साधना** कर अपने जीवन को **आनन्द-मय** बनाया जा सकता है। **'दीपावली'-पर्व— 'सिद्धि-पर्व'** है। इस दिन **'ज्योति'**-रूपा-शक्ति के **चिन्तन-मनन-पूजन** द्वारा हम अपने अभीष्ट की प्राप्ति हेतु **सार्थक उद्-घाटन** कर सकते हैं। गुरु-जनों ने इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमारे कल्याण हेतु हमें अनेक प्रकार की साधनाएँ, स्तोत्र आदि दिए हैं, जिनमें से कुछ साधनाएँ आगे प्रस्तुत की जा रही हैं।

* * *

श्रीगणेश अष्टोत्तर-शत-नामावली

* 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील, श्रीदेवी-संस्थान, १८ / १ड, गोंधले नगर, पुणे

ॐ विघ्नेशाय नमः।
ॐ विश्व-वरदाय नमः।
ॐ विश्व-चक्षुषे नमः।
ॐ जगत्-प्रभवे नमः।
ॐ हिरण्य-रूपाय नमः।
ॐ सर्वात्मने नमः।
ॐ ज्ञान-रूपाय नमः।
ॐ जगन्मयाय नमः।
ॐ ऊर्ध्व-रेतसे नमः।
ॐ महा-बाहवे नमः॥१०॥
ॐ अमेयाय नमः।
ॐ अमित-विक्रमाय नमः।
ॐ वेद-वेद्याय नमः।
ॐ महा-कालाय नमः।
ॐ विद्या-निधये नमः।
ॐ अनामयाय नमः।
ॐ सर्वज्ञाय नमः।
ॐ सर्वगाय नमः।
ॐ शान्ताय नमः।
ॐ गजास्याय नमः॥२०॥
ॐ चित्तेश्वराय नमः।
ॐ विगत-ज्वराय नमः।
ॐ विश्व-मूर्तये नमः।
ॐ अमेयात्मने नमः।
ॐ विश्वाधाराय नमः।
ॐ सनातनाय नमः।

ॐ साम-गायाय नमः
ॐ प्रियाय नमः।
ॐ मन्त्रिणे नमः।
ॐ सत्त्वाधाराय नमः॥३०॥
ॐ सुराधीशाय नमः।
ॐ समस्त-साक्षिणे नमः।
ॐ निर्द्वन्द्वाय नमः।
ॐ निर्लोकाय नमः।
ॐ अमोघ-विक्रमाय नमः।
ॐ निर्मलाय नमः।
ॐ पुण्याय नमः।
ॐ कामदाय नमः।
ॐ कान्तिदाय नमः।
ॐ काम-रूपिणे नमः॥४०॥
ॐ काम-पोषणे नमः।
ॐ कमलाक्षाय नमः।
ॐ गजाननाय नमः।
ॐ सुमुखाय नमः।
ॐ शर्मदाय नमः।
ॐ मूषकाधिप-वाहनाय नमः।
ॐ शुद्धाय नमः।
ॐ दीर्घ-तुण्डाय नमः।
ॐ श्रीपतये नमः।
ॐ अनन्ताय नमः॥५०॥
ॐ मोह-वर्जिताय नमः।
ॐ वक्र-तुण्डाय नमः।

ॐ शूर्प-कर्णाय नमः।
ॐ परमाय नमः।
ॐ योगीशाय नमः।
ॐ योग-धाम्ने नमः।
ॐ उमा-सुताय नमः।
ॐ आपद्धन्त्रे नमः।
ॐ एक-दन्ताय नमः।
ॐ महा-ग्रीवाय नमः॥६०॥
ॐ शरण्याय नमः।
ॐ सिद्ध-सेनाय नमः।
ॐ करुणाय नमः।
ॐ सिद्धाय नमः।
ॐ भगवते नमः।
ॐ अव्यग्राय नमः।
ॐ विकटाय नमः।
ॐ कपिलाय नमः।
ॐ ढुण्ढि-राजाय नमः॥७०॥
ॐ उग्राय नमः।
ॐ भीमोदराय नमः।
ॐ शुभाय नमः।
ॐ गणाध्यक्षाय नमः।
ॐ गणेशाय नमः।
ॐ गणाराध्याय नमः।
ॐ गण-नायकाय नमः।
ॐ ज्योतिः-स्वरूपाय नमः।
ॐ भूतात्मने नमः।
ॐ धूम्र-केतवे नमः॥८०॥
ॐ अनुकूलाय नमः।
ॐ कुमार-गुरवे नमः।

ॐ आनन्दाय नमः।
ॐ हेरम्बाय नमः।
ॐ वेद-स्तुताय नमः।
ॐ नाग-यज्ञोपवीतिने नमः।
ॐ दुर्धर्षाय नमः।
ॐ बाल-दूर्वांकुर-प्रियाय नमः।
ॐ भाल-चन्द्राय नमः।
ॐ विश्व-धात्रे नमः॥९०॥
ॐ शिव-पुत्राय नमः।
ॐ विनायकाय नमः।
ॐ लीला-सेविताय नमः।
ॐ पूर्णाय नमः।
ॐ परम-सुन्दराय नमः।
ॐ विघ्नान्धकाराय नमः।
ॐ सिन्दूर-वरदाय नमः।
ॐ नित्याय नमः।
ॐ विभवे नमः।
ॐ प्रथम-पूजिताय नमः॥१००॥
ॐ दिव्य-पादाब्जाय नमः।
ॐ भक्त-मन्दराय नमः।
ॐ महा - शूराय नमः
ॐ रत्न-सिंहासनाय नमः।
ॐ मणि-कुण्डल-मण्डिताय नमः।
ॐ भक्त-कल्याणाय नमः।
ॐ अमेयाय नमः।
ॐ कल्याण-गुरवे नमः॥१०८॥
ॐ सहस्र-शीर्ष्णे नमः।
ॐ महा-गणपतये नमः॥११०॥

★ ★ ★

'नामावली' - जप के बाद 'दुर्वांकुरान् समर्पयामि' दूब के अंकुर समर्पित कर 'आरती' करें।

महा-लक्ष्मी ध्यानावली

['मन्त्रात्मक सप्तशती' से]

(१) कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः,

हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्।

विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्,

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

हिमालय के समान विशाल एवं उज्ज्वल चार हाथी अपनी सूँड़ों में उठाए हुए अमृत-पूर्ण स्वर्ण-कलशों से अमृत-धारा द्वारा स्वर्ण-समान देह-कान्तिवाली भगवती श्री का अभिषेक कर रहे हैं। भगवती भी अपने दाएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में वर-मुद्रा और बाँएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में अभय-मुद्रा धारण किए हैं। उनके मस्तक पर उज्ज्वल रत्न-मुकुट है। पट्ट-वस्त्र धारण किए वे अरविन्द के ऊपर विराजमाना हैं। उनकी मैं वन्दना करता हूँ। (**सप्तशती-मन्त्र १/५** — वैभव-प्राप्ति)

(२) जयतु जयतु देवी, देव-सङ्घाभि-पूज्या, जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्य-रूपा।

जयतु जयतु सत्या सर्व-भूतान्तरस्था, कर-पद-हृदयस्था लुब्ध-चित्ता भजेऽहम्।।

देव-समूह की पूजनीया देवी की जय हो, जय हो। भद्रा, भार्गवी, भाग्य-रूपा की जय हो, जय हो। सत्या, सभी प्राणियों के अन्तःस्थल में संस्थिता की जय हो, जय हो। हाथों, पैरों और हृदय में संस्थिता चित्त-मोहिनी की मैं वन्दना करता हूँ। (**सप्तशती-मन्त्र १/६** — घोर सङ्कटों से रक्षा)

(३) अक्ष-स्रक्-परशू गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूल पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,

सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

कमल के आसन पर विराजमाना, महिष-मर्दिनी, महा-लक्ष्मी की मैं उपासना करता हूँ, जो मूँगे की जैसी कान्तिवाली हैं और अपने हाथों में १. अक्ष-माला, २. परशु, ३. गदा, ४. बाण, ५. वज्र, ६. पद्म, ७. धनुष, ८. कुण्डिका, ९. दण्ड, १०. शक्ति, ११. खड्ग, १२. ढाल, १३. शङ्ख, १४. घण्टा, १५. मद्य-पात्र, १६. शूल, १७. पाश और १८. सुदर्शन चक्र धारण किए हैं। (**सप्तशती-मन्त्र १/११** — सर्व-सिद्धियों की प्राप्ति)

(४) पीताम्बरां पीत-माल्यां, पीताभरण-भूषिताम्।

पीत-कञ्ज-पद-द्वन्द्वां, कमलां चिन्तयेऽनिशम्।।

पीले वस्त्र, पीली माला और पीले आभूषणों से शोभायमाना और पीले दो कमलों पर दोनों पैर रखे हुई भगवती कमला का मैं दिन-रात ध्यान करता हूँ।(**सप्तशती-मन्त्र १/१४** — सभी का वशीकरण)

★ ★ ★

त्रैलोक्य-मङ्गल लक्ष्मी-स्तोत्र

* *'कुल - वाणी - रत्न' श्री आशुतोषकुमार मिश्र, ए.एस. लेजर प्वाइण्ट, २४ ए.डी.ए. कटरा, प्रयागराज*

नमः कल्याणदे देवि! नमोऽस्तु हरि-वल्लभे! नमो भक्त-प्रिये देवि! लक्ष्मी-देवि! नमोऽस्तु ते॥१
नमो माया-गृहीताङ्गि! नमोऽस्तु हरि-वल्लभे! सर्वेश्वरि! नमस्तुभ्यं, लक्ष्मी-देवि! नमोऽस्तु ते॥२
महा-माये विष्णु-धर्म-पत्नी-रूपे हरि-प्रिये! वाञ्छा-दात्रि सुरेशानि ! लक्ष्मी-देवि!नमोऽस्तु ते॥३
उद्यद्-भानु-सहस्राभे, नयन-त्रय-भूषिते ! रत्नाधारे सुरेशानि ! लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥४
विचित्र-वसने देवि! भव-दुःख-विनाशिनि! कुच-भार-नते देवि! लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥५
साधकाभीष्टदे देवि! अन्न-दान-रतेऽनघे! विष्ण्वानन्द - प्रदे मातर्लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥६
षट्-कोण-पद्म-मध्यस्थे! षडङ्ग-युवती-मये! ब्रह्माण्यादि - स्वरूपे च, लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥७
देवि त्वं चन्द्र-वदने! सर्व-साम्राज्य-दायिनि! सर्वानन्द-करे देवि! लक्ष्मी-देवि ! नमोऽस्तु ते॥८

॥ फल-श्रुति ॥

पूजा-काले पठेद् यस्तु, स्तोत्रमेतत् समाहितः। तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः॥१
प्रातः-काले पठेद् यस्तु, मन्त्र-पूजा-पुरस्सरम्। तस्य चान्न-समृद्धिः स्याद्, वर्द्धमानो दिने दिने॥२
यस्मै कस्मै न दातव्यं, न प्रकाश्यं कदाचन। प्रकाशात् कार्य-हानिः स्यात्, तस्माद् यत्नेन गोपयेत्॥३
त्रैलोक्य-मङ्गलं नाम, स्तोत्रमेतत् प्रकीर्तितम्। ब्रह्म - विद्या-स्वरूपं च, महैश्वर्य्य-प्रदायकम्॥४

विशेष - जो मनुष्य नित्य-पूजन के समय उक्त स्तोत्र का पाठ करता है, उसके पास श्रीलक्ष्मी जी सदा वास करती हैं। इस स्तोत्र का पाठ गुप्त रूप से करना चाहिए। लक्ष्मी देवी के मन्त्र का जप कर, लक्ष्मी देवी को आठ बार पुष्पाञ्जलि देकर उक्त स्तोत्र का पाठ करने से विशेष फल प्राप्त होता है। उक्त स्तोत्र का १०८ बार पाठ करने से स्तोत्र का एक पुरश्चरण होता है। इस प्रकार कई **'पुरश्चरण'** करने से **'लक्ष्मी'** - वैभव की प्राप्ति होती है।

जो मनुष्य उक्त स्तोत्र को भोज-पत्र पर लिखकर सोने की ताबीज में कण्ठ अथवा दाहिनी भुजा में धारण करता है, उसे सभी प्रकार का ऐश्वर्य प्राप्त होता है। जो स्त्री बाँई भुजा में धारण करती है, वह पुत्र-वती होती है।

जो मनुष्य एक मास तक दिन में हविष्यान्न भोजन कर रात्रि में भक्ति-पूर्वक उक्त स्तोत्र का पाठ करता है, वह सभी प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करता है।

★ ★ ★

॥ श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः ॥

श्रीमहा-लक्ष्मी स्तोत्रम्

॥ श्रीअगस्त्य उवाच ॥

जय पद्म-पलाशाक्षि!, जय त्वं श्री-पति-प्रिये! जय मातर्महा-लक्ष्मि!, संसारार्णव-तारिणि!॥१
महा-लक्ष्मि! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि! हरि-प्रिये! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दया-निधे!॥२
पद्मालये! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं च सर्वदे! सर्व-भूत-हितार्थाय, वसु-वृष्टिं सदा कुरु॥३
जगन्मातर्नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दया-निधे! दया-वति! नमस्तुभ्यं, विश्वेश्वरि! नमोऽस्तु ते॥४
नमः क्षीरार्णव-सुते!, नमस्त्रैलोक्य-धारिणि! वसु-वृष्टे! नमस्तुभ्यं, रक्ष मां शरणागतम्॥५
रक्ष त्वं देव-देवेशि! देव-देवस्य वल्लभे! दारिद्र्यात् त्राहि मां लक्ष्मि!, कृपां कुरु ममोपरि॥६
नमस्त्रैलोक्य-जननि!, नमस्त्रैलोक्य-पावनि! ब्रह्मादयो नमन्ति त्वां, जगदानन्द-दायिनि!॥७
विष्णु-प्रिये! नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं जगद्धिते ! आर्ति-हन्त्रि! नमस्तुभ्यं, समृद्धिं कुरु मे सदा॥८
अब्ज-वासे ! नमस्तुभ्यं, चपलायै नमो नमः। चञ्चलायै नमस्तुभ्यं, ललितायै नमो नमः॥९
नमः प्रद्युम्न-जननि!, मातस्तुभ्यं नमो नमः। परिपालय मां मातर्देवि ! त्वं शरणागतम्॥१०
शरण्ये! त्वां प्रपन्नोऽस्मि, कमले! कमलालये! त्राहि त्राहि महा - लक्ष्मि! परित्राण-परायणे!॥११
पाण्डित्यं शोभते नैव, न शोभन्ते गुणा नरे। शीलत्वं नैव शोभेत, महा-लक्ष्मि! त्वया विना॥१२
तावद् विराजते रूपं, तावच्छीलं विराजते। तावद् गुणा नराणां च, यावल्लक्ष्मीः प्रसीदति॥१३

लक्ष्मि! त्वयाऽलंकृत-मानवा ये, पापैर्विमुक्ता नृप-लोक-मान्याः।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति, दुःशीलिनः शील - वतां वरिष्ठाः॥१४

लक्ष्मीर्भूषयते रूपं, लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्। लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां, सर्वाल्लक्ष्मीर्विशिष्यते॥१५

लक्ष्मि! त्वद्-गुण-कीर्तनेन सकला मूर्यात्यलं जिह्वताम्,
रुद्राद्या रवि - चन्द्र - देव - पतयो वक्तुं च नैव क्षमाः।
अस्माभिस्तव रूप - लक्षण - गुणान् वक्तुं कथं शक्यते,
मातर्मां परि-पाहि विश्व-जनके! कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम्॥१६

दीनार्ति - भीतं भव-ताप-पीडितं, धनैर्विहीनं तव पार्श्वमागतम्।
कृपा-निधित्वान्मम लक्ष्मि!सत्वरं, धन-प्रदानाद्धन-नायकं कुरु॥१७

मां विलोक्य स-दये हरि-प्रिये! निर्धनं तव समीपमागतम्।
देहि मे झटिति लक्ष्मि! कराग्रं, वस्त्र-काञ्चन-वरान्नमद्भुतम्॥१८॥

त्वमेव जननी लक्ष्मि! पिता लक्ष्मि! त्वमेव च। भ्राता त्वं च सखा लक्ष्मि!, विद्या लक्ष्मि! त्वमेव च॥१९
त्राहि त्राहि महा-लक्ष्मि!, त्राहि त्राहि सुरेश्वरि! त्राहि त्राहि जगन्मातर्दारिद्र्यात् त्राहि वेगतः॥२०
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि!, नमस्तुभ्यं नमो नमः। धर्माधारे! नमस्तुभ्यं, नमः सम्पत्ति-दायिनि!॥२१
दारिद्र्यार्णव - मग्नोऽहं, निमग्नोऽहं रसातले। मज्जन्तं मां करे धृत्वा, तूद्धर त्वं रमे! द्रुतम्॥२२
किं लक्ष्मि! बहुनोक्तेन, जल्पितेन पुनः पुनः। अन्यन्मे शरणं नास्ति, सत्यं सत्यं हरि-प्रिये!॥२३

॥फल-श्रुति॥

एतच्छ्रुत्वाऽगस्ति-वाक्यं, हृष्यमाणा हरि-प्रिया। उवाच मधुरां वाणीं, तुष्टाऽहं तव सर्वदा॥१॥

॥श्रीलक्ष्मी उवाच॥

यत्-त्वयोक्तमिदं स्तोत्रं, यः पठिष्यति मानवः। शृणोति च महा-भागस्तस्याहं वश-वर्तिनी॥२॥
नित्यं पठति यो मत्त्मा, त्वलक्ष्मीस्तस्य नश्यति। ऋणं च नश्यते तीव्रं, वियोगं नैव पश्यति॥३॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, श्रद्धा-भक्ति-समन्वितः। गृहे तस्य सदा तुष्टा, नित्यं श्री- पतिना सह॥४॥
सुख-सौभाग्य-सम्पन्नो, मनस्वी बुद्धि-मान् भवेत्। पुत्र-वान् गुण-वान् श्रेष्ठो, भोग-भोगा च मानवः॥५॥
इदं स्तोत्रं महा-पुण्यं, लक्ष्म्याः प्रीति-करं वरम्। विष्णु-प्रसाद-जननं, चतुर्वर्ग-फल-प्रदम्॥६॥
राज-द्वारे जयश्चैव, शत्रोश्चैव पराजयः। भूत-प्रेत-पिशाचानां, व्याघ्राणां न भयं तथा॥७॥
न शस्त्रानल-तोयौघाद् भयं तस्य प्रजायते। दुर्वृत्तानां च पापानां, बहु-हानि-करं परम्॥८॥
मन्दुराकरि-शालासु, गवां गोष्ठे समाहितः। पठेत् तद्-दोष-शान्त्यर्थे, महा-पातक-नाशनम्॥९॥
सर्व-सौख्य-करं नृणामायुरारोग्यदं तथा। अगस्ति-मुनिना प्रोक्तं, प्रजानां हित-काम्यया॥१०॥

॥श्रीअगस्त्य-विरचितं श्रीमहा-लक्ष्मी-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

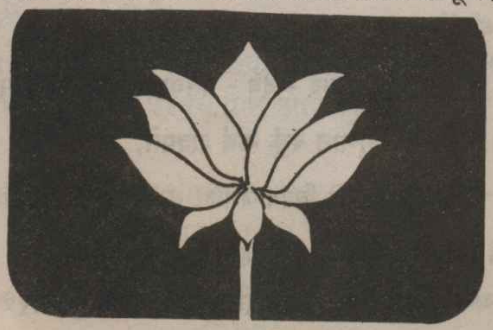

श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः

श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्र-नाम-जप-प्रयोग

सङ्कल्प— ॐ तत्सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-परार्द्धे, श्वेत-वाराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त-देशे, पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक (...) संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रः, अमुक-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो), अहं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीत्यर्थं सहस्र-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्र-नाम-मन्त्रस्य श्रीमहा-विष्णुः भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, **'श्रीं'**-बीजम्, **'ह्रीं'**-शक्तिः, **'ह्रैं'**-कीलकम्, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीमहा-विष्णु-भगवद्-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः हृदये, 'श्रीं'-बीजाय नमः गुह्ये, 'ह्रीं'-शक्तये नमः पादयोः, 'ह्रैं'-कीलकाय नमः नाभौ, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास— श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, श्रैं अनामिकाभ्यां हुं, श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, श्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास— श्रां हृदयाय नमः, श्रीं शिरसे स्वाहा, श्रूं शिखायै वषट्, श्रैं कवचाय हुं, श्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान—

पद्मानने पद्म-करे, सर्व-लोकैक-पूजिते! सान्निध्यं कुरु मे चित्ते, विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थिते! ॥१॥
भगवद्दक्षिणे पार्श्वे, श्रीदेवीं सहसोत्थिताम्। ईश्वरीं सर्व-भूतानां, जननीं सर्व-देहिनाम् ॥२॥
चारु-स्मितां चारु-दन्तीं, चारु-नेत्रानन-भ्रुवम्। सु-कपोलां सु-कर्णाग्र-न्यस्त-मौक्तिक-कुण्डलाम्॥३॥
सु-केशां चारु-बिम्बोष्ठीं, रक्त-तुङ्ग-घन-स्तनीम्। अलकाग्रैरलि-निभैरलंकृत-मुखाम्बुजाम् ॥४॥
लसत्कनक-सङ्काश-पीन-सुन्दर-कन्धराम्। निष्क-कण्ठीं स्तनालम्बिमुक्ता-हार-विराजिताम् ॥५॥
नील-कुन्तल-मध्यस्थां, माणिक्य-मुकुटोज्ज्वलाम्। शुक्ल-माल्याम्बर-धरां, तप्त-हाटक-वर्णिनीम्॥६॥
अनन्य-सुलभैस्तैस्तैर्गुणैः साम्य-युतां निजैः। अनुरूपांनवद्याङ्गीं, हरेर्नित्यानपायिनीम् ॥७॥

मानस-पूजन— ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ शं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

श्रीमहा-लक्ष्मी-सहस्र-नामावलि

ॐ श्रियै नमः
ॐ वासुदेव-महिष्यै नमः
ॐ पुं-प्रधानेश्वरेश्वर्यै नमः
ॐ अचिन्त्यानन्त-विभवायै नमः
ॐ भावाभाव-विभाविन्यै नमः
ॐ अहं-भावात्मिकायै नमः
ॐ पद्मायै नमः
ॐ शान्तानन्त-जितात्मिकायै नमः
ॐ ब्रह्म-भावं गतायै नमः
ॐ त्यक्त-भीतायै नमः ॥ १० ॥
ॐ सर्व-जगन्मय्यै नमः
ॐ षाड्-गुण्य-पूर्णायै नमः
ॐ त्रय्यन्त-रूपायै नमः
ॐ आत्मानप-गामिन्यै नमः
ॐ एक-योग्यायै नमः
ॐ अशून्य-भावाकृत्यै नमः
ॐ तेजः-प्रभाविन्यै नमः
ॐ भाव्याभावक-भावायै नमः
ॐ आत्म-भाव्यायै नमः
ॐ काम-दुघे नमः ॥ २० ॥
ॐ आत्म-भुवे नमः
ॐ भाव्याभाव-मय्यै नमः
ॐ दिव्यायै नमः
ॐ भेद्य-भेदक-भावगायै नमः
ॐ जगत्-कुटुम्बिन्यै नमः
ॐ अखिलाधारायै नमः
ॐ काम-विजृम्भिण्यै नमः
ॐ पञ्च-कृत्य-कर्यै नमः
ॐ पञ्च-शक्ति-मय्यै नमः
ॐ आत्म-वल्लभायै नमः ॥ ३० ॥
ॐ भावाभावानुगायै नमः
ॐ सर्व-सम्मतायै नमः
ॐ आत्मोप-गूहिन्यै नमः
ॐ अपृथक्-चारिण्यै नमः
ॐ सौम्यायै नमः
ॐ सौम्य-रूपायै नमः
ॐ अव्यवस्थितायै नमः
ॐ आद्यन्त-रहितायै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ भव-भाव्य-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ महा-विभूत्यै नमः
ॐ समतां गतायै नमः
ॐ ज्योतिर्गणेश्वर्यै नमः
ॐ सर्व-कार्य-कर्यै नमः
ॐ धर्म-स्वभावायै नमः
ॐ आत्माग्रतःस्थितायै नमः
ॐ आज्ञा-सम-विभक्ताङ्ग्यै नमः
ॐ ज्ञानानन्द-क्रिया-मय्यै नमः
ॐ स्वातन्त्र्य-रूपायै नमः
ॐ देवोरः-स्थितायै नमः ॥ ५० ॥
ॐ तद्धर्म-धर्मिण्यै नमः
ॐ सर्व-भूतेश्वर्यै नमः
ॐ सर्व-भूत-मात्रे नमः
ॐ आत्म-मोहिन्यै नमः
ॐ सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै नमः
ॐ सर्व-व्यापिन्यै नमः
ॐ प्राप्त-योगिन्यै नमः
ॐ विमुक्ति-दायिन्यै नमः
ॐ भक्त-गम्यायै नमः
ॐ संसार-तारिण्यै नमः ॥ ६० ॥
ॐ धर्मार्थ-वादिन्यै नमः
ॐ व्योम-निलयायै नमः
ॐ व्योम-विग्रहायै नमः
ॐ पञ्च-व्योम-पद्यै नमः
ॐ रक्षो-व्यावृत्यै नमः
ॐ प्राप्य-पूरिण्यै नमः
ॐ आनन्द-रूपायै नमः
ॐ सर्वाप्ति-शालिन्यै नमः
ॐ शक्ति-नायिकायै नमः
ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः ॥ ७० ॥
ॐ हैरण्य-प्राकारायै नमः
ॐ हेम-मालिन्यै नमः
ॐ प्रस्फुरत्तायै नमः
ॐ भद्र-होमायै नमः
ॐ वेशिन्यै नमः
ॐ रजत-स्रजायै नमः
ॐ स्वाज्ञा-कार्य-भरायै नमः
ॐ नित्य-सुरभ्यै नमः
ॐ व्योम-चारिण्यै नमः
ॐ योग-क्षेम-वहायै नमः ॥ ८० ॥
ॐ सर्व-सुलभायै नमः
ॐ इच्छा-क्रियात्मिकायै नमः
ॐ महा-समूहायै नमः
ॐ निखिल-प्ररोहायै नमः

ॐ वेद-गोचरायै नमः
ॐ विस्मयाधायिन्यै नमः
ॐ ब्रह्म-संहितायै नमः
ॐ सु-गुणोत्तरायै नमः
ॐ प्रज्ञा-परिमितायै नमः
ॐ आत्मानुरूपायै नमः ॥ ९० ॥
ॐ सत्योपायार्जितायै नमः
ॐ मनो-ज्ञेयायै नमः
ॐ ज्ञान-गम्यायै नमः
ॐ नित्य-मुक्तायै नमः
ॐ आत्म-सेविन्यै नमः
ॐ कर्तृ-शक्त्यै नमः
ॐ सु-गहनायै नमः
ॐ भोक्तृ-शक्त्यै नमः
ॐ गुण-प्रियायै नमः
ॐ ज्ञान-शक्त्यै नमः ॥ १०० ॥
ॐ अनौपम्यायै नमः
ॐ पर-शक्त्यै नमः
ॐ निरामयायै नमः
ॐ अकलङ्कायै नमः
ॐ महा-शक्त्यै नमः
ॐ निराधारायै नमः
ॐ विकासिन्यै नमः
ॐ महा-मायायै नमः
ॐ महा-नन्दायै नमः
ॐ ब्रह्म-नीत्यै नमः ॥ ११० ॥
ॐ निराश्रयायै नमः
ॐ एक-स्वरूपायै नमः
ॐ त्रिविधायै नमः
ॐ संख्यातीतायै नमः
ॐ निरञ्जनायै नमः
ॐ आत्म-सक्तायै नमः
ॐ नित्य-शुचये नमः
ॐ निर्विकल्पायै नमः
ॐ सुखोचितायै नमः
ॐ नित्य-शान्तायै नमः ॥ १२० ॥
ॐ निस्तरङ्गायै नमः
ॐ निर्भिन्नायै नमः
ॐ सर्व-भेदिन्यै नमः
ॐ असङ्कीर्णायै नमः
ॐ अविधेयात्मने नमः
ॐ निषेद्धयायै नमः
ॐ सर्व-पावन्यै नमः
ॐ निष्कामनायै नमः
ॐ सर्व-रसायै नमः
ॐ अभेद्यायै नमः ॥ १३० ॥
ॐ सर्वार्थ-साधिन्यै नमः
ॐ अनिर्देश्यायै नमः
ॐ अपरिमितायै नमः
ॐ निर्विकारायै नमः
ॐ त्रि-लक्षणायै नमः
ॐ अभयङ्कर्यै नमः
ॐ स्त्री-स्वरूपायै नमः
ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ सदसदाकृत्यै नमः
ॐ अप्रतर्क्यायै नमः ॥ १४० ॥
ॐ अप्रतिहतायै नमः
ॐ नियन्त्र्यै नमः
ॐ यन्त्र-वाहिन्यै नमः
ॐ हार्द-मूर्त्यै नमः
ॐ महा-मूर्त्यै नमः
ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ विश्व-गोपिन्यै नमः
ॐ वर्धमानायै नमः
ॐ अनवद्याङ्ग्यै नमः
ॐ निरवद्यायै नमः ॥ १५० ॥
ॐ त्रि-वर्गदायै नमः
ॐ अप्रमेयायै नमः
ॐ अमृत-दुघायै नमः
ॐ कूटस्थायै नमः
ॐ कुल-नन्दिन्यै नमः
ॐ अविगीतायै नमः
ॐ तन्त्र-सिद्धायै नमः
ॐ योग-सिद्धायै नमः
ॐ अमरेश्वर्यै नमः
ॐ विश्व-सूत्यै नमः ॥ १६० ॥
ॐ तर्पयन्त्यै नमः
ॐ नित्य-तृप्तायै नमः
ॐ महौषध्यै नमः
ॐ शब्दात्ययायै नमः
ॐ शब्द-सहायै नमः
ॐ कृतज्ञायै नमः
ॐ कृत-लक्षणायै नमः
ॐ त्रिवर्तिन्यै नमः
ॐ त्रिलोकस्थायै नमः
ॐ भूर्भुवःस्वरयोनिजायै नमः
ॐ अग्राह्यायै नमः
ॐ अग्राहकायै नमः
ॐ अनन्ताह्वयायै नमः
ॐ सर्वाति-शायिन्यै नमः
ॐ व्योम-पद्मायै नमः
ॐ कृत-धुरायै नमः
ॐ पूर्ण-कामायै नमः
ॐ महेश्वर्यै नमः
ॐ सु-वाच्यायै नमः
ॐ वाचिकायै नमः ॥ १८० ॥

ॐ सत्य-कथनायै नमः
ॐ सर्व-पावन्यै नमः
ॐ लक्ष्यमाणायै नमः
ॐ लक्षयन्त्यै नमः
ॐ जगज्ज्येष्ठायै नमः
ॐ शुभावहायै नमः
ॐ जगत्-प्रतिष्ठायै नमः
ॐ भुवन-भर्त्र्यै नमः
ॐ गूढ-प्रभाविन्यै नमः
ॐ क्रिया-योगात्मिकायै नमः ॥
ॐ मूर्तायै नमः
ॐ हृदब्जस्थायै नमः
ॐ महा-क्रमायै नमः
ॐ परम-दिवे नमः
ॐ प्रथमजायै नमः
ॐ परमाप्तायै नमः
ॐ जगन्निधये नमः
ॐ आत्मानपायिन्यै नमः
ॐ तुल्य-स्वरूपायै नमः
ॐ सम-लक्षणायै नमः ॥ २०० ॥
ॐ तुल्य-वृत्तायै नमः
ॐ सम-वयसे नमः
ॐ मोद-मानायै नमः
ॐ खग-ध्वजायै नमः
ॐ तुल्य-चेष्टायै नमः
ॐ तुल्य-शीलायै नमः
ॐ वरदायै नमः
ॐ काम-रूपिण्यै नमः
ॐ समग्र-लक्षणायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः ॥ २१० ॥
ॐ तुल्य-भूत्यै नमः
ॐ सनातनायै नमः

ॐ महर्द्धये नमः
ॐ सत्य-सङ्कल्पायै नमः
ॐ भूमिजायै नमः
ॐ परमेश्वर्यै नमः
ॐ जगन्मात्रे नमः
ॐ सूत्र-वत्यै नमः
ॐ भूत-धात्र्यै नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः ॥ २२० ॥
ॐ महाऽभिलाषायै नमः
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ प्रधानायै नमः
ॐ सर्व-भासिन्यै नमः
ॐ नाना-वपुषे नमः
ॐ बहु-विधायै नमः
ॐ सर्वज्ञायै नमः
ॐ पुण्य-कीर्तनायै नमः
ॐ भूताश्रयायै नमः
ॐ हृषीकेशायै नमः ॥ २३० ॥
ॐ अशोकायै नमः
ॐ स्वाङ्गि-वाहिकायै नमः
ॐ ब्रह्मात्मिकायै नमः
ॐ पुण्य-जन्यै नमः
ॐ सत्य-कामायै नमः
ॐ समाधि-भुवे नमः
ॐ हिरण्य-गर्भायै नमः
ॐ गम्भीरायै नमः
ॐ गो-धूल्यै नमः
ॐ कमलासनायै नमः ॥ २४० ॥
ॐ जित-क्रोधायै नमः
ॐ कुमुदिन्यै नमः
ॐ वैजयन्त्यै नमः
ॐ मनोजवायै नमः

ॐ धन-लक्ष्म्यै नमः
ॐ स्वस्ति-कर्यै नमः
ॐ राज्य-लक्ष्म्यै नमः
ॐ महा-सत्यै नमः
ॐ जय-लक्ष्म्यै नमः
ॐ महा-गोष्ठ्यै नमः ॥ २५० ॥
ॐ मघोन्यै नमः
ॐ माधव-प्रियायै नमः
ॐ पद्म-गर्भायै नमः
ॐ वेद-वत्यै नमः
ॐ विविक्तायै नमः
ॐ परमेष्ठिन्यै नमः
ॐ सुवर्ण-बिन्दवे नमः
ॐ महत्यै नमः
ॐ महा-योगि-प्रियायै नमः
ॐ अनघायै नमः ॥ २६० ॥
ॐ पद्मेस्थितायै नमः
ॐ वेद-मय्यै नमः
ॐ कुमुदायै नमः
ॐ जय-वाहिन्यै नमः
ॐ संहृत्यै नमः
ॐ निर्मितायै नमः
ॐ ज्योतिषे नमः
ॐ नियत्यै नमः
ॐ विविधोत्सवायै नमः
ॐ रुद्र-वन्द्यायै नमः ॥ २७० ॥
ॐ सिन्धु-मत्यै नमः
ॐ वेद-मात्रे नमः
ॐ मधु-व्रतायै नमः
ॐ विश्वम्भरायै नमः
ॐ हैमवत्यै नमः
ॐ समुद्रायै नमः

ॐ इच्छा-विहारिण्यै नमः
ॐ अनुकूलायै नमः
ॐ यज्ञ-वत्यै नमः
ॐ शत-कोटच्यै नमः ॥ २८० ॥
ॐ सु-पेशलायै नमः
ॐ धर्मोदयायै नमः
ॐ धर्म-सेवायै नमः
ॐ सु-कुमार्यै नमः
ॐ सभा-वत्यै नमः
ॐ भीमायै नमः
ॐ ब्रह्म-स्तुतायै नमः
ॐ मध्य-प्रभायै नमः
ॐ देवर्षि-वन्दितायै नमः
ॐ देव-भोग्यायै नमः ॥ २९० ॥
ॐ महा-भागायै नमः
ॐ प्रतिज्ञायै नमः
ॐ पूर्ण-शेवध्यै नमः
ॐ सु-वर्णायै नमः
ॐ रुचिर-प्रख्यायै नमः
ॐ भोगिन्यै नमः
ॐ भोग-दायिन्यै नमः
ॐ वसु-प्रणायै नमः
ॐ उत्तम-वध्वै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः ॥ ३०० ॥
ॐ कमलोद्भवायै नमः
ॐ विद्वत्-प्रियायै नमः
ॐ पद्म-चिह्नायै नमः
ॐ वरिष्ठायै नमः
ॐ कमलेक्षणायै नमः
ॐ पद्म-प्रियायै नमः
ॐ सु-प्रसन्नायै नमः
ॐ प्रमोदायै नमः

ॐ प्रिय-पार्श्वगायै नमः
ॐ विश्व-भूषायै नमः ॥ ३१० ॥
ॐ कान्ति-मत्यै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ वीणा-रवोत्सुकायै नमः
ॐ रोचिष्कर्यै नमः
ॐ स्व-प्रकाशायै नमः
ॐ शोभमानायै नमः
ॐ विहङ्गमायै नमः
ॐ देवाङ्गस्थायै नमः
ॐ परिणत्यै नमः
ॐ काम-वत्सायै नमः ॥ ३२० ॥
ॐ महा-मत्यै नमः
ॐ इल्वलायै नमः
ॐ उत्पल-नाभायै नमः
ॐ आधि-शमन्यै नमः
ॐ वर-वर्णिन्यै नमः
ॐ स्व-निष्ठायै नमः
ॐ पद्म-निलयायै नमः
ॐ सद्-गत्यै नमः
ॐ पद्म-गन्धिन्यै नमः
ॐ पद्म-वर्णायै नमः ॥ ३३० ॥
ॐ काम-योन्यै नमः
ॐ चण्डिकायै नमः
ॐ चारु-कोपनायै नमः
ॐ रति-स्नुषायै नमः
ॐ पद्म-धरायै नमः
ॐ पूज्यायै नमः
ॐ त्रैलोक्य-मोहिन्यै नमः
ॐ नित्य-कन्यायै नमः
ॐ बिन्दु-मालिन्यै नमः
ॐ अक्षयायै नमः ॥ ३४० ॥

ॐ सर्व-गन्धिन्यै नमः
ॐ गन्धात्मिकायै नमः
ॐ सु-रसिकायै नमः
ॐ दीप्त-मूर्त्यै नमः
ॐ सु-मध्यमायै नमः
ॐ पृथु-श्रोण्यै नमः
ॐ सौम्य-मुख्यै नमः
ॐ सुभगायै नमः
ॐ विष्टर-श्रुत्यै नमः
ॐ स्मिताननायै नमः ॥ ३५० ॥
ॐ चारु-गत्यै नमः
ॐ निम्न-नाभ्यै नमः
ॐ महा-स्तन्यै नमः
ॐ स्निग्ध-वेण्यै नमः
ॐ भगवत्यै नमः
ॐ सु-कान्तायै नमः
ॐ वाम-लोचनायै नमः
ॐ पल्लवाङ्घ्र्यै नमः
ॐ पद्म-मनसे नमः
ॐ पद्म-बोधायै नमः ॥ ३६० ॥
ॐ महाऽप्सरसे नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ चारु-हासायै नमः
ॐ शुभ-दृष्ट्यै नमः
ॐ ककुद्मिन्यै नमः
ॐ कम्बु-ग्रीवायै नमः
ॐ सु-जघनायै नमः
ॐ रक्त-पाण्यै नमः
ॐ मनोरमायै नमः
ॐ पद्मिन्यै नमः ॥ ३७० ॥
ॐ मन्द-गमनायै नमः
ॐ चतुर्दंष्ट्रायै नमः

ॐ चतुर्भुजायै नमः
ॐ शुभ-रेखायै नमः
ॐ विलास-भ्रुवे नमः
ॐ शुक-वाण्यै नमः
ॐ कला-वत्यै नमः
ॐ ऋतु-नासायै नमः
ॐ कल-रवायै नमः
ॐ वरारोहायै नमः ॥ ३८० ॥
ॐ तलोदर्यै नमः
ॐ सन्ध्यायै नमः
ॐ बिम्बाधरायै नमः
ॐ पूर्व-भाषिण्यै नमः
ॐ श्रीसमाह्वयायै नमः
ॐ इक्षु-चापायै नमः
ॐ सुम-शरायै नमः
ॐ दिव्य-भूषायै नमः
ॐ मनोहरायै नमः
ॐ वासव्यै नमः ॥ ३९० ॥
ॐ पाण्डरच्छत्रायै नमः
ॐ करभोरवे नमः
ॐ तिलोत्तमायै नमः
ॐ सीमन्तिन्यै नमः
ॐ प्राण-शक्त्यै नमः
ॐ विभीषिण्यै नमः
ॐ असु-धारिण्यै नमः
ॐ भद्रायै नमः
ॐ जयावहायै नमः
ॐ चन्द्र-वदनायै नमः ॥ ४०० ॥
ॐ कुटिलालकायै नमः
ॐ चित्राम्बरायै नमः
ॐ चित्र-गन्धायै नमः
ॐ रत्न-मौलि-समुज्ज्वलायै नमः
ॐ दिव्यायुधायै नमः
ॐ दिव्य-माल्यायै नमः
ॐ विशाखायै नमः
ॐ चित्र-वाहनायै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ सिन्धु-तनयायै नमः ॥ ४१० ॥
ॐ निःश्रेण्यै नमः
ॐ सु-महासिन्यै नमः
ॐ साम-प्रियायै नमः
ॐ नव-मृग्यै नमः
ॐ सर्व-सेव्यायै नमः
ॐ वराङ्गनायै नमः
ॐ गन्ध-द्वारायै नमः
ॐ दुराधर्षायै नमः
ॐ नित्य-पुष्टायै नमः
ॐ करीषिण्यै नमः ॥ ४२० ॥
ॐ देव-जुष्टायै नमः
ॐ दिव्य-वर्णायै नमः
ॐ दिव्य-गन्धायै नमः
ॐ स्व-कर्दमायै नमः
ॐ अनन्त-रूपायै नमः
ॐ अनन्तस्थायै नमः
ॐ सर्वदाऽनन्त-सङ्गमायै नमः
ॐ यज्ञाशन्यै नमः
ॐ महा-वृष्ट्यै नमः
ॐ सर्व-पूज्यायै नमः ॥ ४३० ॥
ॐ वषट्-क्रियायै नमः
ॐ योग-प्रियायै नमः
ॐ वियन्नाभ्यै नमः
ॐ अनन्त-श्रियै नमः
ॐ अतीन्द्रियायै नमः
ॐ योगि-सेव्यायै नमः
ॐ सत्य-रतायै नमः
ॐ योग-मायायै नमः
ॐ पुरातन्यै नमः
ॐ सर्वेश्वर्यै नमः ॥ ४४० ॥
ॐ सु-तरुण्यै नमः
ॐ शरण्यायै नमः
ॐ धर्म-देवतायै नमः
ॐ सुतरायै नमः
ॐ संवृत-ज्योतिषे नमः
ॐ योगिन्यै नमः
ॐ योग-सिद्धिदायै नमः
ॐ सृष्टि-शक्त्यै नमः
ॐ द्योतमान-भूतायै नमः
ॐ मङ्गल-देवतायै नमः ॥ ४५० ॥
ॐ संहार-शक्त्यै नमः
ॐ प्रबलायै नमः
ॐ निरुपाधये नमः
ॐ परा-वरायै नमः
ॐ उत्तारिण्यै नमः
ॐ तारयन्त्यै नमः
ॐ शाश्वत्यै नमः
ॐ समितिं-जयायै नमः
ॐ महा-श्रियै नमः
ॐ अजहत्-कीर्त्यै नमः ॥ ४६० ॥
ॐ योग-श्रियै नमः
ॐ सिद्धि-साधन्यै नमः
ॐ पुण्य-श्रियै नमः
ॐ पुण्य-निलयायै नमः
ॐ ब्रह्म-श्रियै नमः
ॐ ब्राह्मण-प्रियायै नमः
ॐ राज-श्रियै नमः
ॐ राज-कलितायै नमः

ॐ फल-श्रियै नमः
ॐ स्वर्ग-दायिन्यै नमः ॥ ४७० ॥
ॐ देव-श्रियै नमः
ॐ अद्भुत-कथायै नमः
ॐ वेद-श्रियै नमः
ॐ श्रुति-मार्गिण्यै नमः
ॐ तमोपहायै नमः
ॐ अव्यय-निधये नमः
ॐ लक्ष्मणायै नमः
ॐ हृदयङ्गमायै नमः
ॐ मृत-सञ्जीविन्यै नमः
ॐ शुभ्रायै नमः ॥ ४८० ॥
ॐ चन्द्रिकायै नमः
ॐ सर्वतोमुख्यै नमः
ॐ सर्वोत्तमायै नमः
ॐ मित्र-विन्दायै नमः
ॐ मैथिल्यै नमः
ॐ प्रिय-दर्शनायै नमः
ॐ सत्यभामायै नमः
ॐ वेद-वेद्यायै नमः
ॐ सीतायै नमः
ॐ प्रणत-पोषिण्यै नमः ॥ ४९० ॥
ॐ मूल-प्रकृत्यै नमः
ॐ ईशानायै नमः
ॐ शिवदायै नमः
ॐ दीप्त-दीपिन्यै नमः
ॐ अभिप्रियायै नमः
ॐ स्वैर-वृत्त्यै नमः
ॐ रुक्मिण्यै नमः
ॐ सर्व-साक्षिण्यै नमः
ॐ गान्धारिण्यै नमः
ॐ पर-गत्यै नमः ॥ ५०० ॥

ॐ तत्त्व-गर्भायै नमः
ॐ भवाभवायै नमः
ॐ अन्तर्वर्त्यै नमः
ॐ महा-मुद्रायै नमः
ॐ विष्णु-दुर्गायै नमः
ॐ महा-बलायै नमः
ॐ मदयन्त्यै नमः
ॐ लोक-धारिण्यै नमः
ॐ अदृश्यायै नमः
ॐ सर्व-निष्कृत्यै नमः ॥ ५१० ॥
ॐ देव-सेनायै नमः
ॐ आत्म-फलदायै नमः
ॐ वसुधायै नमः
ॐ मुख्य-मातृकायै नमः
ॐ क्षीर-धारायै नमः
ॐ घृत-मय्यै नमः
ॐ जुह्वत्यै नमः
ॐ यज्ञ-दक्षिणायै नमः
ॐ योग-निद्रायै नमः
ॐ योग-रतायै नमः ॥ ५२० ॥
ॐ ब्रह्मचर्यायै नमः
ॐ दुरत्ययायै नमः
ॐ सिद्ध-पिच्छायै नमः
ॐ महा-दुर्गायै नमः
ॐ जयन्त्यै नमः
ॐ खग-वाहिन्यै नमः
ॐ जगत्-प्रियायै नमः
ॐ विरूपाक्ष्यै नमः
ॐ सु-वर्णायै नमः
ॐ क्रूर-तापिन्यै नमः ॥ ५३० ॥
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ काल-रात्र्यै नमः

ॐ निशि-दृष्टायै नमः
ॐ करालिकायै नमः
ॐ त्रि-शूलिन्यै नमः
ॐ खड्ग-धरायै नमः
ॐ महा-काल्यै नमः
ॐ इन्द्र-मालिन्यै नमः
ॐ एक-वीरायै नमः
ॐ भद्र-काल्यै नमः ॥ ५४० ॥
ॐ सौनन्द्यै नमः
ॐ उल्लसद्-गदायै नमः
ॐ नारायण्यै नमः
ॐ जगत्-पूरिण्यै नमः
ॐ उर्वरायै नमः
ॐ द्रुहिण-प्रस्वै नमः
ॐ यज्ञ-कामायै नमः
ॐ लेलिहानायै नमः
ॐ तीर्थ-कर्यै नमः
ॐ उग्र-विक्रमायै नमः ॥ ५५० ॥
ॐ गरुत्मदुदयायै नमः
ॐ अत्युग्रायै नमः
ॐ वाराह्यै नमः
ॐ मातृ-भाषिण्यै नमः
ॐ अश्व-क्रान्तायै नमः
ॐ रथ-क्रान्तायै नमः
ॐ विष्णु-क्रान्तायै नमः
ॐ उरु-चारिण्यै नमः
ॐ वैरोचिन्यै नमः
ॐ नारसिंह्यै नमः ॥ ५६० ॥
ॐ जीमूतायै नमः
ॐ शुभदेक्षणायै नमः
ॐ दीक्षा-विधायै नमः
ॐ विश्व-शक्त्यै नमः

ॐ निज-शक्त्यै नमः
ॐ सुदर्शिन्यै नमः
ॐ प्रतीत्यै नमः
ॐ जगत्यै नमः
ॐ वन्य-धारिण्यै नमः
ॐ कलि-नाशिन्यै नमः ॥ ५७० ॥
ॐ अयोध्यायै नमः
ॐ अच्छिन्न-सन्तानायै नमः
ॐ महा-रत्नायै नमः
ॐ सुखावहायै नमः
ॐ राज-वर्त्यै नमः
ॐ अर्क-प्रतिभायै नमः
ॐ विनयित्र्यै नमः
ॐ महाऽशनायै नमः
ॐ अमृत-स्यन्दिन्यै नमः
ॐ सीमायै नमः ॥ ५८० ॥
ॐ यज्ञ-गर्भायै नमः
ॐ समीक्षणायै नमः
ॐ आकूत्यै नमः
ॐ ऋग्-यजुः-साम-घोषायै नमः
ॐ आराम-वधूत्सुकायै नमः
ॐ सोमपायै नमः
ॐ माधव्यै नमः
ॐ नित्य-कल्याण्यै नमः
ॐ कमलार्चितायै नमः
ॐ योग-रूढ्यै नमः ॥ ५९० ॥
ॐ स्वार्थ-जुष्टायै नमः
ॐ वह्नि-वर्णायै नमः
ॐ जितासुरायै नमः
ॐ यज्ञ-विद्यायै नमः
ॐ गुह्य-विद्यायै नमः
ॐ अध्यात्म-विद्यायै नमः
ॐ कृतागमायै नमः
ॐ आप्यायिन्यै नमः
ॐ कलातीतायै नमः
ॐ सु-मित्रायै नमः ॥ ६०० ॥
ॐ पर-भक्तिदायै नमः
ॐ काङ्क्षमाणायै नमः
ॐ महा-मायायै नमः
ॐ कोल-कामायै नमः
ॐ अमरावत्यै नमः
ॐ सु-वीर्यायै नमः
ॐ दुःस्वप्न-हरायै नमः
ॐ देवक्यै नमः
ॐ वसु-देवतायै नमः
ॐ सौदामिन्यै नमः ॥ ६१० ॥
ॐ मेघ-रथायै नमः
ॐ ऋद्धिदायै नमः
ॐ दैत्य-मर्दिन्यै नमः
ॐ श्रेयस्कर्यै नमः
ॐ चित्र-लीलायै नमः
ॐ एकायन्यै नमः
ॐ रत्न-पादुकायै नमः
ॐ मनस्यमानायै नमः
ॐ तुलस्यै नमः
ॐ रोग-नाशिन्यै नमः ॥ ६२० ॥
ॐ उरु-प्रथायै नमः
ॐ तेजस्विन्यै नमः
ॐ सुखोज्ज्वालायै नमः
ॐ मन्द-रेखायै नमः
ॐ अमृताशिन्यै नमः
ॐ ब्रह्मिष्ठायै नमः
ॐ वह्नि-शमन्यै नमः
ॐ जुषमाणायै नमः
ॐ गुणात्ययायै नमः
ॐ कादम्बर्यै नमः ॥ ६३० ॥
ॐ ब्रह्म-रतायै नमः
ॐ विधात्र्यै नमः
ॐ उज्ज्वल-हस्तिकायै नमः
ॐ अक्षोभ्यायै नमः
ॐ सर्वतो-भद्रायै नमः
ॐ वयस्यायै नमः
ॐ स्वस्ति-दक्षिणायै नमः
ॐ सहस्रास्यायै नमः
ॐ ज्ञान-मात्रे नमः
ॐ वैश्वानर्यै नमः ॥ ६४० ॥
ॐ अक्ष-वर्तिन्यै नमः
ॐ प्रत्यग्-वरायै नमः
ॐ वारण-वत्यै नमः
ॐ अनसूयायै नमः
ॐ दुरासदायै नमः
ॐ अरुन्धत्यै नमः
ॐ कुण्डलिन्यै नमः
ॐ भव्यायै नमः
ॐ दुर्गति-नाशिन्यै नमः
ॐ मृत्युञ्जयायै नमः ॥ ६५० ॥
ॐ त्रास-हरायै नमः
ॐ निर्भयायै नमः
ॐ शत्रु-सूदिन्यै नमः
ॐ एकाक्षरायै नमः
ॐ सु-पुरन्ध्र्यै नमः
ॐ सुर-पक्षायै नमः
ॐ वरातुलायै नमः
ॐ सकृद्-विभासायै नमः
ॐ प्रद्युम्नायै नमः
ॐ हरि-भद्रायै नमः ॥ ६६० ॥

ॐ धुरन्धरायै नमः
ॐ बिल्व-प्रियायै नमः
ॐ अवन्यै नमः
ॐ चक्र-हृदयायै नमः
ॐ कम्बु-तीर्थगायै नमः
ॐ सर्व-मन्त्रात्मिकायै नमः
ॐ विद्युते नमः
ॐ यशोदायै नमः
ॐ सर्व-रञ्जिन्यै नमः
ॐ ध्वजच्छत्राश्रयायै नमः ॥ ६७० ॥
ॐ भूम्यै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ सद्-गुणोज्ज्वलायै नमः
ॐ सुषेणायै नमः
ॐ लोक-विदितायै नमः
ॐ काम-सुवे नमः
ॐ जगदादि-भुवे नमः
ॐ वेदान्त-योन्यै नमः
ॐ जिज्ञासायै नमः
ॐ मनीषायै नमः ॥ ६८० ॥
ॐ सम-दर्शिन्यै नमः
ॐ सहस्र-शक्त्यै नमः
ॐ आवृत्त्यै नमः
ॐ सु-स्थिरायै नमः
ॐ श्रेयसां निधये नमः
ॐ रोहिण्यै नमः
ॐ रेवत्यै नमः
ॐ चन्द्र-सोदर्यै नमः
ॐ भद्र-मोदिन्यै नमः
ॐ आर्यायै नमः ॥ ६९० ॥
ॐ गव्य-प्रियायै नमः
ॐ विश्व-भाविन्यै नमः

ॐ सु-विभाविन्यै नमः
ॐ सु-प्रदृश्यायै नमः
ॐ काम-चारिण्यै नमः
ॐ अप्रमत्तायै नमः
ॐ ललन्तिकायै नमः
ॐ मोक्ष-लक्ष्म्यै नमः
ॐ जगद्योन्यै नमः
ॐ व्योम-लक्ष्म्यै नमः ॥ ७०० ॥
ॐ सु-दुर्लभायै नमः
ॐ भास्कर्यै नमः
ॐ पुण्य-गेहस्थायै नमः
ॐ मनोज्ञायै नमः
ॐ विभव-प्रदायै नमः
ॐ लोक-स्वामिन्यै नमः
ॐ अच्युतार्थायै नमः
ॐ पुष्कलायै नमः
ॐ जगदाकृत्यै नमः
ॐ विचित्र-हारिण्यै नमः ॥ ७१० ॥
ॐ कान्तायै नमः
ॐ पावन्यै नमः
ॐ भूत-भाविन्यै नमः
ॐ प्राणिन्यै नमः
ॐ प्राणदायै नमः
ॐ विदुष्यै नमः
ॐ विश्व-ब्रह्माण्ड-वासिन्यै नमः
ॐ सम्पूर्णायै नमः
ॐ परमोत्साहायै नमः
ॐ श्रीमत्यै नमः ॥ ७२० ॥
ॐ श्री-पत्यै नमः
ॐ श्रुत्यै नमः
ॐ श्रयन्त्यै नमः
ॐ श्रयमाणायै नमः

ॐ क्ष्मायै नमः
ॐ विश्व-रूपायै नमः
ॐ प्रसादिन्यै नमः
ॐ हर्षिण्यै नमः
ॐ प्रथमायै नमः
ॐ सर्वायै नमः ॥ ७३० ॥
ॐ विशालायै नमः
ॐ काम-वर्षिण्यै नमः
ॐ सु-प्रतीकायै नमः
ॐ पृश्नि-मत्यै नमः
ॐ निवृत्त्यै नमः
ॐ विविधायै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ सु-यज्ञायै नमः
ॐ मधुरायै नमः
ॐ श्रीदायै नमः ॥ ७४० ॥
ॐ देव-रात्यै नमः
ॐ महा-मनसे नमः
ॐ स्थूलायै नमः
ॐ सर्वाकृत्यै नमः
ॐ सूक्ष्मायै नमः
ॐ निम्न-गव्यायै नमः
ॐ तमोनुदायै नमः
ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ वागीश्वर्यै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः ॥ ७५० ॥
ॐ सर्वायै नमः
ॐ आद्यायै नमः
ॐ स्वरु-शोषिण्यै नमः
ॐ शक्त्यात्मिकायै नमः
ॐ शब्द-शक्त्यै नमः
ॐ विशिष्टायै नमः

ॐ वायु-मत्यै नमः
ॐ अमायै नमः
ॐ आन्वीक्षिक्यै नमः
ॐ त्रयी-वार्तायै नमः ॥ ७६० ॥
ॐ दण्ड-नीत्यै नमः
ॐ नियामिकायै नमः
ॐ व्याल्यै नमः
ॐ सङ्कर्षण्यै नमः
ॐ द्योतायै नमः
ॐ महा-देव्यै नमः
ॐ अपराजितायै नमः
ॐ कपिलायै नमः
ॐ पिङ्गलायै नमः
ॐ स्वस्थायै नमः ॥ ७७० ॥
ॐ बलाक्यै नमः
ॐ घोष-नन्दिन्यै नमः
ॐ अजितायै नमः
ॐ कर्षण्यै नमः
ॐ क्षान्त्यै नमः
ॐ गरुडायै नमः
ॐ गरुडासनायै नमः
ॐ ह्लादिन्यै नमः
ॐ अनुग्रहायै नमः
ॐ नित्यायै नमः ॥ ७८० ॥
ॐ ब्रह्म-विद्यायै नमः
ॐ हिरण्मय्यै नमः
ॐ मह्यै नमः
ॐ शुद्ध-विधायै नमः
ॐ पृथ्व्यै नमः
ॐ शतानन्दायै नमः
ॐ अंशु-मालिन्यै नमः
ॐ यज्ञाश्रयायै नमः
ॐ ख्याति-परायै नमः
ॐ स्तव्यायै नमः ॥ ७९० ॥
ॐ घृष्ट्यै नमः
ॐ त्रि-कालगायै नमः
ॐ सम्बोधिन्यै नमः
ॐ शब्द-पूर्णायै नमः
ॐ विजयायै नमः
ॐ अंशु-मत्यै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ स्तुति-प्रियायै नमः
ॐ ख्यात्यै नमः ॥ ८०० ॥
ॐ जीवयन्त्यै नमः
ॐ पुनर्वसवे नमः
ॐ दीक्षायै नमः
ॐ भक्तार्तिहायै नमः
ॐ रक्षायै नमः
ॐ परीक्षायै नमः
ॐ यज्ञ-सम्भवायै नमः
ॐ आर्द्रायै नमः
ॐ पुष्करिण्यै नमः
ॐ पुण्यायै नमः ॥ ८१० ॥
ॐ गण्यायै नमः
ॐ दारिद्र्य-भञ्जिन्यै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ मान्यायै नमः
ॐ पद्म-नेम्यै नमः
ॐ भार्गव्यै नमः
ॐ वंश-वर्धिन्यै नमः
ॐ तीक्ष्ण-प्रवृत्त्यै नमः
ॐ सत्-कीर्त्यै नमः
ॐ निधि-सेव्यायै नमः ॥ ८२० ॥
ॐ अघ-नाशिन्यै नमः
ॐ संज्ञायै नमः
ॐ निःसंशयायै नमः
ॐ पूर्वायै नमः
ॐ वन-मालायै नमः
ॐ वसुन्धरायै नमः
ॐ पृथ्व्यै नमः
ॐ महोत्कटायै नमः
ॐ अहल्यायै नमः
ॐ मण्डलायै नमः ॥ ८३० ॥
ॐ आश्रित-मानदायै नमः
ॐ सर्वस्यै नमः
ॐ नित्योदितायै नमः
ॐ उदारायै नमः
ॐ जृम्भमाणायै नमः
ॐ महोदयायै नमः
ॐ चन्द्र-कान्तोदितायै नमः
ॐ सूर्यायै नमः
ॐ चतुरश्रायै नमः
ॐ मनोजवायै नमः ॥ ८४० ॥
ॐ बालायै नमः
ॐ कुमार्यै नमः
ॐ युवत्यै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ भक्त-वत्सलायै नमः
ॐ मेदिन्यै नमः
ॐ उपनिषन्मिश्रायै नमः
ॐ सुम-वीरवे नमः
ॐ धनेश्वर्यै नमः
ॐ दुर्मर्षण्यै नमः ॥ ८५० ॥
ॐ सु-चरितायै नमः
ॐ बोधायै नमः

ॐ शोभायै नमः
ॐ सु-वर्चलायै नमः
ॐ यमुनायै नमः
ॐ अक्षौहिण्यै नमः
ॐ गङ्गायै नमः
ॐ मन्दाकिन्यै नमः
ॐ अमलाशयायै नमः
ॐ गोदायै नमः ॥ ८६० ॥
ॐ गोदावर्यै नमः
ॐ चन्द्र-भागायै नमः
ॐ कावेर्यै नमः
ॐ उदन्वत्यै नमः
ॐ सिनी-वाल्यै नमः
ॐ कुह्वै नमः
ॐ राकायै नमः
ॐ वारणायै नमः
ॐ सिन्धु-मत्यै नमः
ॐ अमायै नमः ॥ ८७० ॥
ॐ पूर्तये नमः
ॐ मायात्मिकायै नमः
ॐ स्फूर्तये नमः
ॐ व्याख्यायै नमः
ॐ सूत्रायै नमः
ॐ प्रजा-वत्यै नमः
ॐ वृद्धयै नमः
ॐ स्थित्यै नमः
ॐ ध्रुवायै नमः
ॐ बुद्धयै नमः ॥ ८८० ॥
ॐ त्रिगुणायै नमः
ॐ गुण-गह्वरायै नमः
ॐ अमोघायै नमः
ॐ शान्तिदायै नमः
ॐ सत्यायै नमः

ॐ ज्ञानदायै नमः
ॐ उत्कर्षिण्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ भामिन्यै नमः ॥ ८९० ॥
ॐ लोलायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ काम-दुघे नमः
ॐ विध्यै नमः
ॐ प्रज्ञायै नमः
ॐ रामायै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ सन्ध्यायै नमः
ॐ सुभद्रायै नमः
ॐ सर्व-मङ्गलायै नमः ॥ ९०० ॥
ॐ नन्दायै नमः
ॐ भद्रायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ रिक्तायै नमः
ॐ तिथि-पूर्णायै नमः
ॐ ऋतम्भरायै नमः
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ कामेश्वर्यै नमः
ॐ निष्ठायै नमः
ॐ काम्यायै नमः ॥ ९१० ॥
ॐ रम्यायै नमः
ॐ धरायै नमः
ॐ स्मृत्यै नमः
ॐ शङ्खिन्यै नमः
ॐ चक्रिण्यै नमः
ॐ श्यामायै नमः
ॐ सामायै नमः
ॐ गोत्रायै नमः

ॐ रमायै नमः
ॐ द्युत्यै नमः ॥ ९२० ॥
ॐ शान्तिदायै नमः
ॐ स्तुत्यै नमः
ॐ सिद्धयै नमः
ॐ विराजायै नमः
ॐ अत्युज्ज्वलायै नमः
ॐ अव्ययायै नमः
ॐ वाण्यै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ इन्दिरायै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥ ९३० ॥
ॐ मेधायै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ अप्रमायै नमः
ॐ द्युतये नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ रति-रुषायै नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ धृत्यै नमः ॥ ९४० ॥
ॐ सभायै नमः
ॐ शिष्टायै नमः
ॐ इष्टायै नमः
ॐ शुच्यै नमः
ॐ धात्र्यै नमः
ॐ सु-धारायै नमः
ॐ अक्षोण्यजायै नमः
ॐ अमृतायै नमः
ॐ रमण्यै नमः
ॐ एकायै नमः ॥ ९५० ॥
ॐ शारदाम्बायै नमः

ॐ स-मेधायै नमः
ॐ आद्यायै नमः
ॐ शुभाक्षरायै नमः
ॐ रत्नावल्यै नमः
ॐ भारत्यै नमः
ॐ ईडायै नमः
ॐ धीरायै नमः
ॐ धियै नमः
ॐ केवलायै नमः ॥ ९६० ॥
ॐ आत्मदायै नमः
ॐ यस्यै नमः
ॐ तस्यै नमः
ॐ शुद्धयै नमः
ॐ सोस्मितायै नमः
ॐ कस्यै नमः
ॐ नीलायै नमः
ॐ राधायै नमः
ॐ अमृतोद्भवायै नमः
ॐ विभूत्यै नमः ॥ ९७० ॥
ॐ निष्कलायै नमः
ॐ रम्यायै नमः
ॐ रक्षायै नमः
ॐ सु-विमलायै नमः
ॐ क्षमायै नमः
ॐ प्राप्त्यै नमः
ॐ वासन्तिका-लेखायै नमः
ॐ भूरि-बीजायै नमः
ॐ महाऽङ्गदायै नमः
ॐ वर-धुर्यायै नमः ॥ ९८० ॥
ॐ स्वधायै नमः
ॐ ह्रियै नमः
ॐ भुवे नमः
ॐ कामिन्यै नमः
ॐ शोक-नाशिन्यै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ प्रीत्यै नमः
ॐ असहनायै नमः
ॐ नर्मदायै नमः
ॐ गोकुलाश्रयायै नमः ॥ ९९० ॥
ॐ अर्क-प्रभायै नमः
ॐ रसेभायै नमः
ॐ श्री-निलयायै नमः
ॐ इन्दु-प्रभायै नमः
ॐ अद्भुतायै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ कृशानु-प्रभायै नमः
ॐ वज्र-लम्भनायै नमः
ॐ सर्व-भूमिदायै नमः
ॐ भोग-प्रियायै नमः ॥ १००० ॥
ॐ भोग-वत्यै नमः
ॐ भोगीन्द्र-शयनासनायै नमः
ॐ अश्व-पूर्वायै नमः
ॐ रथ-मध्यायै नमः
ॐ हस्ति-नाद-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ सर्व-लक्षण-लक्षण्यायै नमः
ॐ सर्व-लोक-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यायै नमः
ॐ दृष्टादृष्ट-फल-प्रदायै नमः ॥१००९॥

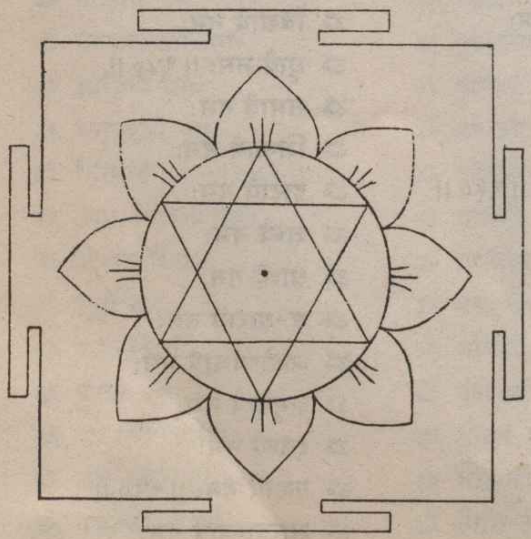

पूजन-तर्पण और हवन

उक्त नाम-मन्त्रों के अन्त में **'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः'** जोड़कर **'यन्त्र-राज'** में गन्धाक्षत, कुंकुम, पुष्प से **'पूजन-तर्पण'** करना चाहिए।

'नाम-मन्त्रों' के अन्त में **'स्वाहा'** जोड़कर **'हवन'** करना चाहिए।

'दीपावली' महा-पर्व
हेतु
कुछ विशेष साधनाएँ

१

सुख-शान्ति-दायक महा-लक्ष्मी महा-मन्त्र-प्रयोग

विनियोग : ॐ अस्य श्रीपञ्च - दश-ऋचस्य श्री - सूक्तस्य श्रीआनन्द - कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा- सुता ऋषयः, अनुष्टुप् - वृहति - प्रस्तार - पंक्ति - छन्दांसि, श्रीमहा-लक्ष्मी देवताः, श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रसाद - सिद्ध्यर्थे राज - वश्यार्थे सर्व - स्त्री - पुरुष-वश्यार्थे महा - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीआनन्द - कर्दम - चिक्लीतेन्दिरा - सुता - ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्- वृहति - प्रस्तार - पंक्ति - छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहा - लक्ष्मी - प्रसाद-सिद्ध्यर्थे राज - वश्यार्थे सर्व - स्त्री - पुरुष - वश्यार्थे महा - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ रजत-स्रजायै मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ हिरण्य-स्रजायै अनामिकाभ्यां हुं। ॐ हिरण्य-स्रक्षायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ हिरण्य-वर्णायै कर-तल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै नमः हृदयाय नमः। ॐ चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा। ॐ रजत-स्रजायै नमः शिखायै वषट्। ॐ हिरण्य-स्रजायै नमः कवचाय हुम्। ॐ हिरण्य-स्रक्षायै नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान : ॐ अरुण-कमल-संस्था, तद्रजः पुञ्ज-वर्णा,
कर-कमल - धृतेष्टा, भीति - युग्माम्बुजा च।
मणि-मुकुट- विचित्रालंकृता कल्प-जालैर्भवतु—
भुवन - माता सततं श्रीः श्रियै नः ॥

मानस-पूजनः ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु - तत्त्वात्मकं धूपं श्री महा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि - तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।ष्टा।।

।। महा-मन्त्र ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह।।१

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम्।।२

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

अश्व-पूर्वां रथ- मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवामुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

कांसोऽस्मि तां हिरण्य - प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।
पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदारां।
तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।५

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आदित्य-वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे।।७

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

क्षुत्-पिपासामला ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहं।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्।।८

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

गन्ध-द्वारां दुराधर्षां नित्य-पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व-भूताना, तामिहोपह्वये श्रियम्।।९

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भ्रम-कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम्।।११

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
निच - देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह।।१३

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीं।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह।।१४

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्च-दशर्चं च, श्री-कामः सततं जपेत्।।१६

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।

।। स्तुति-पाठ ।।

।। ॐ नमो नमः।।

पद्मानने पद्मिनि पद्म - हस्ते, पद्म-प्रिये पद्म-दलायताक्षि!
विश्व-प्रिये विष्णु-मनोनुकूले, त्वत्- पाद-पद्मं मयि सन्निधत्स्व।।

पद्मानने पद्म - उरु, पद्माक्षी पद्म - सम्भवे!
त्वन्मा भजस्व पद्माक्षि! येन सौख्यं लभाम्यहम्।।

अश्व - दायि च गो-दायि, धनदायै महा-धने!
धनं मे जुषतां देवि! सर्व - कामांश्च देहि मे।।

पुत्र - पौत्र - धन - धान्यं, हस्त्यश्वादि - गवे रथम्।
प्रजानां भवति मातः, अयुष्मन्तं करोतु माम्।।
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रा बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्नुते।।
वैनतेय सोमं पिब, सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो, मह्यं ददातु सोमिनि।।
न क्रोधो न च मात्सर्यं, न लोभो नाशुभा मतीः।
भवन्ती कृत - पुण्यानां, भक्तानां श्री-सूक्तं जपेत्।।

★★★

२

सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे महा-लक्ष्मी महा-मन्त्र-प्रयोग

विनियोग : ॐ अस्य श्रीपञ्च-दश-ऋचस्य श्री-सूक्तस्य श्रीआनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा-सुता ऋषयः, अनुष्टुप्-वृहति-प्रस्तार-पंक्ति-छन्दांसि, श्रीमहा-लक्ष्मी देवताः, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद- सिद्ध्यर्थे राज - वश्यार्थे सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे महा-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीआनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा-सुता-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्-वृहति-प्रस्तार-पंक्ति-छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे राज-वश्यार्थे सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्यार्थे महा-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ रजत-स्रजायै मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ हिरण्य - स्रजायै अनामिकाभ्यां हुं। ॐ हिरण्य - स्रक्षायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ हिरण्य - वर्णायै कर-तल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास : ॐ हिरण्मय्यै नमः हृदयाय नमः। ॐ चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा।। ॐ रजत-स्रजायै नमः शिखायै वषट्। ॐ हिरण्य-स्रजायै नमः कवचाय हुम्। ॐ हिरण्य-स्रक्षायै नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान : **ॐ अरुण-कमल-संस्था, तद्रजः पुञ्ज-वर्णा, कर-कमल-धृतेष्टा, भीति-युग्माम्बुजा च।**
मणि-मुकुट-विचित्रालंकृता कल्प-जालैर्भवतु— भुवन - माता सततं श्रीः श्रियै नः।।

मानस-पूजन : ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। महा-मन्त्र।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण - रजत - स्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह ।।१

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम् ।।२

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

अश्व-पूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।

पद्मे स्थितां पद्म - वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव - जुष्टामुदाराम्।

तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आदित्य - वर्णे! तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥७

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

क्षुत् - पिपासाऽमला ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्।

अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥८

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

गन्ध - द्वारां दुराधर्षां, नित्य - पुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्व - भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।

पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

कर्दमेन प्रजा - भूता, मयि सम्भ्रम - कर्दम।

श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम् ॥११

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।

निच - देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, सुवर्णां हेम - मालिनीम्।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह ॥१३

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह ॥१४

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनप - गामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।

श्रियः पञ्च-दशर्चं च, श्री-कामः सततं जपेत् ॥१६

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये! मह्यं प्रसीद - प्रसीद महा - लक्ष्मि! ते नमः

विधि— उक्त **महा-मन्त्र** के तीन **'पाठ'** नित्य करे। **'पाठ'** के बाद कमल के श्वेत फूल, तिल, मधु, घी, शक्कर, बेल-गूदा मिलाकर बेल की लकड़ी से नित्य १०८ बार **हवन** करे। ऐसा ६८ दिन करे। इससे मन - वाञ्छित धन प्राप्त होता है। **हवन - मन्त्र :** ॐ श्रीं ह्रीं महा-लक्ष्म्यै सर्वाभीष्ट-सिद्धिदायै स्वाहा।

३

एकाक्षर लक्ष्मी-बीज (श्रीं) की साधना

❀ प्रस्तुत - कर्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री सतीशकुमार उपाध्याय, प्रयागराज (उ०प्र०)

[**'श्रीं'** बीज प्रत्यक्ष चिन्तामणि है। माँ कमला के इस एकाक्षरी रूप के चमत्कार आए दिन देखने को मिलते हैं। गुरु-मुख से **'श्रीं'** -बीज ग्रहण कर, तीन-चार बार **'पुरश्चरण'** कर कोई भी इसके प्रभाव का अनुभव कर कता है। आज भी यह बीज इच्छित ऐश्वर्य-प्रद है, इसमें सन्देह नहीं। — प्रस्तुत-कर्ता]

विनियोग— ॐ अस्य श्रीकमला-एकाक्षरी-मन्त्रस्य भृगुः ऋषिः, निवृत् छन्दः, श्रीः देवता, शं बीजं, ई शक्तिः, मम धनाप्तये विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीभृगु-ऋषये नमः शिरसि, निवृच्छन्दसे नमः मुखे, श्रीदेवतायै नमः हृदये, शं-बीजाय नमः गुह्ये, ई- शक्तये नमः पादयोः, मम धनाप्तये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास— ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ श्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्ग-न्यास— ॐ श्रां हृदयाय नमः, ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रूं शिखायै वषट्, ॐ श्रैं कवचाय हुं, ॐ श्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान— कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः,

हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत- घटैराषिञ्च्यमानां श्रियम्।।

बिभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब - ललितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

अर्थात् हिमालय के समान विशाल एवं उज्ज्वल चार हाथी अपनी सूँड़ों में उठाए हुए अमृत-पूर्ण स्वर्ण-कलशों से अमृत-धारा द्वारा स्वर्ण-समान देह-कान्तिवाली भगवती श्री का अभिषेक कर रहे हैं। भगवती भी अपने दाएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में वर-मुद्रा और बाँएँ ऊपरी हाथ में पद्म, नीचे के हाथ में अभय-मुद्रा धारण किए हैं। उनके मस्तक पर उज्ज्वल रत्न-मुकुट है। पट्ट वस्त्र धारण किए वे अरविन्द के ऊपर विराजमाना हैं।

पुरश्चरण— निर्दिष्ट नियमों का पालन करते हुए १२ लाख'जप' कर दशांश-क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन करे। अन्त में ब्राह्मण-भोजन कराए।

पूजन— सुगन्धित पुष्पादि द्वारा **'श्रीकमला-पूजन-यन्त्र'** में पूजन करे। **'आवरण-पूजन' 'हिन्दी तन्त्रसार'**, पृष्ठ१२१ पर दिया गया है। यदि **'आवरण-पूजन'** नित्य न कर सके, तो माँ कमला के १०८ नामों द्वारा नित्य पूजन करे।

हवन— 'पुरश्चरण' के अनुसार जप-संख्या पूर्ण होने पर १२०० कमल-पुष्पों को मधु में मिलाकर उनकी 'आहुति' दे। अथवा, शक्कर - घी से युक्त तिल, बिल्व-फल की 'आहुति' दे।

विशेष— यदि कोई योग्य 'गुरु' न मिले, तो जगद्-गुरु भगवान् दक्षिणामूर्ति से **'श्रीं'**-बीज ग्रहण कर 'पुरश्चरण' का 'सङ्कल्प' करे। रात्रि-जागरण-पूर्वक माँ की पूजा जप-पूर्वक करे। आश्चर्य-जनक रूप से कार्य-सिद्धि होगी, इसमें सन्देह नहीं। विशेष लाभ देखने के लिए **'श्रीं'**-बीज से सम्पुटित **'सप्तशती'** का पाठ करे। प्रयोग-कर्ता फल को देखकर स्वयं आश्चर्य-चकित होगा, अन्यों की क्या बात!

४

श्रीमञ्जु-घोष की साधना

❋ *'कुल-वाणी-रत्न' पं० रामकृष्ण तिवारी', सैदाबाद, प्रयागराज (उ०प्र०)*

'मञ्जुघोष' शशधर की तरह शुभ्र वर्ण के हैं। इनके एक हाथ में खड्ग और दूसरे हाथ में पुस्तक है। ये कुमार और अति शान्त हैं। ये बड़े मनोरम हैं और इनके मस्तक पर पाँच चूड़ाएँ हैं। इनकी मूर्ति स्थूल है और इनकी आँखें कमल के फूल की पङ्खुड़ियों की तरह बड़ी-बड़ी हैं।

'मञ्जुघोष' के मन्त्र के जप से साधक की जड़ता दूर हो जाती है। इनका पहला शुभ मन्त्र है — **'अ-र-व-च-ल-धीं'** । इस **मन्त्र का केवल १०८ बार जप करने से प्रत्यक्ष चमत्कार देखने को मिलता है।** साधक की जड़ता और सुस्ती न जाने कहाँ गायब हो जाती है। यह इनका **मूल-मन्त्र (प्रधान मन्त्र)** है।

दोपहर के समय पानी में, अथवा भोजन के बाद जूठी थाली पर, अथवा गाँव या शहर के बाहर, गोबर के ऊपर और रात्रि के समय गाय या बैल बाँधने की जगह पर अर्थात् 'गोष्ठ-स्थान' (गो-शाला) में 'गो-मुण्ड' के ऊपर **'डमरु'** के आकार का यन्त्र बनाकर उसके ऊपर और नीचे तीन पंक्तियों में मूल-मन्त्र **(अ-र-व-च-ल-धीं)**, लिखा जाता है। **'यन्त्र'** चन्दन की लकड़ी की बनाई हुई लेखनी से लिखना चाहिए।

जल में **'यन्त्र'** लिखने से साधक **सर्वत्र विजयी** होता है। भोजन करने के बाद जूठी थाली में **'यन्त्र'** लिखने से **धन की प्राप्ति** होती है। गोबर पर **'यन्त्र'** लिखने से **सर्वज्ञता— विद्वत्ता की प्राप्ति** होती है।

गुरु-मुख से इस मन्त्र को लेकर दो मास उपासना करने से इच्छित धन की प्राप्ति होती है।

साधक-वर्ग के अति शीघ्र कल्याण के हेतु यहाँ एक बहुत ही सरल विधि दी जा रही है। सभी नित्य भोजन करते ही हैं। भोजन करते समय **'अ-र-व-च-ल-धीं'** मन्त्र का 'जप' मन-ही-मन करता जाए। भोजन करने के बाद जूठी थाली में **'डमरु'** जैसा **'यन्त्र'** अँगुली से बनाकर, उसके ऊपर और नीचे तीन बार उक्त मन्त्र लिखे। इस **'मन्त्र'** को बाद में जल से धो डाले। कुछ ही दिनों में मन्त्र का प्रभाव दिखाई देगा और सभी अभाव दूर हो जाएँगे।

★ ★ ★

५

महा-लक्ष्मी अष्टोत्तर शत-नाम-साधना

❀ *'कुल-वाणी-रत्न' श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास, कोट मुहल्ला, डीडवाना (राजस्थान)*

विनियोग — ॐ अस्य श्रीमहा-माया महा-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महा-माया देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम महा-माया-प्रसाद- सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यास — ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, महा-माया-देवतायै नमः हृदि, ह्रीं-बीजाय नमः नाभौ, क्लीं-कीलकाय नमः पादयोः, श्रीं-शक्तये नमः सर्वाङ्गे।

अङ्ग - न्यास— ह्रीं-बीजाय नमः हृदि। श्रीं - शक्तये नमः शिरसि। क्लीं-कीलकाय नमः शिखायै वषट्। ब्रह्मर्षये नमः कवचाय हुं। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। महा-माया -देवतायै नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान— **संविद्-रूपा ज्योतिराद्या स्फुरन्ती, ब्रह्माण्डानां कोटिभिः क्रीडमाना।**
स्वात्मारामा दिव्य-रूपा पराख्या, देवी श्यामा सर्वदाऽस्मान् पुनातु।।

।।अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्।।

ॐ ह्रींकारा महा-माया, स्वतन्त्रा चेतना परा। कलातीता कला-रूपा, वैन्दवी नाद-रूपिणी।।१
प्रणवा प्रकृतिः प्राज्ञा, तैजसी विश्व-धारिणी। महा-लक्ष्मी महा-काली, महा-वागीश्वरी रमा।।२
राज-राजेश्वरी प्रज्ञा, सिद्धा च ललिता ध्रुवा। परा-भट्टारिका दिव्या, कुल-कुण्डैक-शायिनी।।३
श्यामा रामा प्रभा कामा, उमा माहेश्वरीश्वरी। भोगदा भुवना वाणी, भारती च शतम्भरा।।४
सन्ध्या सरस्वती गोत्रा, मोहिनी ऋतजा ऋचा। सोम चाथर्वणा वेदी, याजुषी वेद-संस्तुता।।५
पुराणा चेतिहासा च, निगमा चाङ्गना-समा। गतिर्मतिर्मुक्तिदा च, चिन्ता-मणिरधोक्षजा।।६
शुभा श्रेयस्करी भूमिः, शिखा तरणि-विग्रहा। हंसी हंसात्मिका सोऽहं, भवा भावात्मिका सुधा।।७
अणिमा महिमा प्राप्तिरीशिता वशिता क्षमा। नित्यानन्द - घना मेघा, स्मृतिर्हीर्भी कुलाङ्गना।।८
त्रिकूटा च त्रि-बीजा च, गायत्री च शताक्षरा। मृत्युञ्जया जात-वेदा, सावित्री व्याहृतिः क्रमात्।९
एकाक्षरी त्र्यक्षरी च, चतुष्षष्टि-स्वरात्मिका। माता दधिमथी सिन्धु - क्षोभिणी कुल-देवता।।१०
गोष्ठेश्वरी मङ्गला च, सर्वतोऽक्षि-शिरो-मुखा। वैनायिकी वैष्णवी च, सौरी शैवी स्वयम्भवी।।११
सर्वदा सर्व-रूपा च, ब्रह्मादि-जननी परा। शुभ-नाम्नां शतं देव्याः, अष्टाधिकमथोत्तरम्।।१२
मन्त्र — ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः भगवत्यै दधि-मथ्यै नमः। (१६)

★

६

ऋण-हरण श्री गणेश-मन्त्र-प्रयोग

'तन्त्र-शास्त्र' में विविध समस्याओं के निवारण तथा आत्म-कल्याण के लिए विभिन्न मन्त्रादि का विधान है। **''कलौ चण्डी-विनायकौ''** के अनुसार वर्तमान काल में **'चण्डी'** तथा **'गणेश'** की उपासना सद्यः फल-दायी होती है। **श्रीगणेश** ऋद्धि-सिद्धि के दाता हैं। अतः आर्थिक समस्याओं एवं ऋण-नाश के लिए **श्रीगणेश** की उपासना निश्चयात्मक रूप से फल-प्रद होती है। ऋण-नाश हेतु **'ऋण-हरण गणेश-स्तोत्र'** बहुत प्रसिद्ध है।

❖ *श्री के० के० श्रीवास्तव, श्री ज्योतिष-संस्थान, पेटलावद (म०प्र०)*

'ऋण-हरण श्रीगणेश-मन्त्र-प्रयोग'— धन-दायी प्रयोग है। जब कहीं से धन की प्राप्ति होगी, तभी ऋण का हरण होगा। अतः यह प्रयोग धन-दायी है। यदि प्रयोग नियमित करना हो, तो साधक अपने द्वारा निर्धारित वस्त्र में कर सकता है किन्तु, यदि प्रयोग पर्व-विशेष मात्र में करना हो, तो पीले रङ्ग के आसन पर पीले वस्त्र (धोती) धारण कर पीले रङ्ग की माला अथवा पीले सूत में बनी स्फटिक की माला से करे। **भगवान् गणेश जी** की पूजा में **'दूर्वा-अंकुर'** चढ़ाए। यदि **'हवन'** करना हो, तो **'लाक्षा'** एवं **'दूर्वा'** से **'हवन'** करे। **विनियोग, न्यास, ध्यान** कर **आवाहन** और **पूजन** करे। **'पूजन'** के बाद **'कवच'**- पाठ कर **'स्तोत्र'** का पाठ करे।

❖ *श्री बलराम बली, २८३/६३ क/२ हरचन्दपुर गद्दी कनौरा, पो० मानकनगर, लखनऊ (उ०प्र०)*

विनियोग— ॐ अस्य श्रीऋण-हरण-कर्तृ-गणपति-मन्त्रस्य सदा-शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीऋण-हर्ता गणपति देवता, ग्लौं बीजं, गं शक्तिः, गों कीलकं, मम सकल-ऋण-नाशार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— सदा-शिव-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीऋण-हर्ता-गणपति-देवतायै नमः हृदि, ग्लौं-वीजाय नमः गुह्ये, गं शक्तये नमः पादयो, गों कीलकाय नमः नाभौ, मम सकल-ऋण-नाशार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास— ॐ गणेश अंगुष्ठाभ्यां नमः, ऋणं छिन्धि-तर्जनीभ्यां नमः, वरेण्यं मध्यमाभ्यां नमः, हुं अनामिकाभ्यां नमः, नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, फट् कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास— ॐ गणेश हृदयाय नमः, ऋणं छिन्धि शिरसे स्वाहा, वरेण्यं शिखायै वषट्, हुं कवचाय हुम्, नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्, फट् अस्त्राय फट्।

ध्यान— **ॐ सिन्दूर-वर्णं द्वि-भुजं गणेशं, लम्बोदरं पद्म-दले निविष्टम्।**
ब्रह्मादि-देवैः परि-सेव्यमानं, सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्॥

'आवाहन' आदि कर पञ्चोपचारों से अथवा **'मानसिक पूजन'** करे।

।। कवच-पाठ ।।

ॐ आमोदश्च शिरः पातु, प्रमोदश्च शिखोपरि, सम्मोदो भ्रू-युगे पातु, भ्रू-मध्ये च गणाधिपः।
गण-क्रीडश्चक्षुर्युगं, नासायां गण - नायकः, जिह्वायां सुमुखः पातु, ग्रीवायां दुर्म्मुखः।।
विघ्नेशो हृदये पातु, बाहु-युग्मे सदा मम, विघ्न-कर्त्ता च उदरे, विघ्न-हर्त्ता च लिङ्गके।
गज-वक्त्रो कटि-देशे, एक-दन्तो नितम्बके, लम्बोदरः सदा पातु, गुह्य-देशे ममारुणः।।
व्याल-यज्ञोपवीती मां, पातु पाद-युगे सदा, जापकः सर्वदा पातु, जानु-जङ्घे गणाधिपः।
हरिद्राः सर्वदा पातु, सर्वाङ्गे गण-नायकः।।

।। स्तोत्र-पाठ ।।

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक्, पूजितः फल-सिद्धये। सदैव पार्वती-पुत्रः, ऋण-नाशं करोतु मे।।१।।
त्रिपुरस्य वधात् पूर्वं, शम्भुना सम्यगर्चितः। हिरण्य - कश्यप्वादीनां, वधार्थे विष्णुनार्चितः।।२।।
महिषस्य वधे देव्या, गण - नाथः प्रपूजितः। तारकस्य वधात् पूर्वं, कुमारेण प्रपूजितः।।३।।
भास्करेण गणेशो हि, पूजितश्छवि-सिद्धये। शशिना कान्ति - वृद्ध्यर्थं, पूजितो गण-नायकः।
पालनाय च तपसां, विश्वामित्रेण पूजितः।।४।।

।।फल-श्रुति।।

इदं त्वृण-हर-स्तोत्रं, तीव्र-दारिद्र्य-नाशनम्, एक-वारं पठेन्नित्यं, वर्षमेकं समाहितः।
दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा, कुबेर-समतां व्रजेत्।।

मन्त्र— ॐ गणेश! ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट् (१५ अक्षर)

उक्त मन्त्र का अन्त में कम-से-कम २१ बार **'जप'** करे। २१,००० **'जप'** से इसका **'पुरश्चरण'** होता है। वर्ष भर **'स्तोत्र'** पढ़ने से **दारिद्र्य-नाश** होता है तथा **लक्ष्मी-प्राप्ति** होती है। इसके स्मरण-मात्र से भूत-प्रेत-पिशाच का नाश होता है।

७

ऋण-मोचन महा-गणपति-स्तोत्र

❖ *'कुल-वाणी-रत्न' श्रीअनिलगोविन्द बोकील, हड़पसर, पुणे (महा-राष्ट्र)*

विनियोग— ॐ अस्य श्रीऋण-मोचन महा-गणपति-स्तोत्र-मन्त्रस्य भगवान् शुक्राचार्य ऋषिः, ऋण-मोचन-गणपतिः देवता, मम ऋण-मोचनार्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— भगवान् शुक्राचार्य-ऋषये नमः शिरसि, ऋण-मोचन-गणपति-देवतायै नमः हृदि, मम ऋण-मोचनार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥ मूल-स्तोत्र ॥

ॐ स्मरामि देव-देवेश! वक्र-तुण्डं महा-बलम्। षडक्षरं कृपा-सिन्धु, नमामि ऋण-मुक्तये॥१
महा-गणपतिं देवं, महा-सत्त्वं महा-बलम्। महा-विघ्न-हरं सौम्यं, नमामि ऋण - मुक्तये॥२
एकाक्षरं एक-दन्तं, एक - ब्रह्म सनातनम्। एकमेवाद्वितीयं च, नमामि ऋण - मुक्तये॥३
शुक्लाम्बरं शुक्ल-वर्णं, शुक्ल-गन्धानुलेपनम्। सर्व-शुक्ल-मयं देवं, नमामि ऋण - मुक्तये॥४
रक्ताम्बरं रक्त-वर्णं, रक्त-गन्धानुलेपनम्। रक्त - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥५
कृष्णाम्बरं कृष्ण-वर्णं, कृष्ण-गन्धानुलेपनम्। कृष्ण -पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण मुक्तये॥६
पीताम्बरं पीत-वर्णं, पीत-गन्धानुलेपनम्। पीत - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥७
नीलाम्बरं नील-वर्णं, नील-गन्धानुलेपनम्। नील - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥८
धूम्राम्बरं धूम्र-वर्णं, धूम्र - गन्धानुलेपनम्। धूम्र - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥९
सर्वाम्बरं सर्व-वर्णं, सर्व - गन्धानुलेपनम्। सर्व - पुष्पैः पूज्यमानं, नमामि ऋण - मुक्तये॥१०
भद्र-जातं च रूपं च, पाशांकुश-धरं शुभम्। सर्व - विघ्न - हरं देवं, नमामि ऋण-मुक्तये॥११

॥ फल-श्रुति ॥

यः पठेत् ऋण-हर-स्तोत्रं, प्रातः-काले सुधी नरः। षण्मासाभ्यन्तरे चैव, ऋणच्छेदो भविष्यति॥१

जो व्यक्ति उक्त **'ऋण-मोचन-स्तोत्र'** का नित्य प्रातः-काल पाठ करता है, उसका छः मास में ऋण-निवारण होता है।

८

श्रीहनुमत्-साधना

❖ *प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं० रामप्रसाद अवस्थी, सुभाष मार्ग, जौरा (म०प्र०)*

मन्त्र — 'ॐ नमो हनुमते श्रीरामचन्द्राय नमः।

विधि — पहले मध्य-रात्रि में गीले **'सिन्दूर'** से अपने **'आसन'** के बराबर स्थान लीपकर, उस पर अपना **'लाल आसन'** बिछाए। फिर अपने सम्मुख **'लकड़ी'** की एक स्वच्छ **'चौकी'** पर **'श्रीहनुमान जी'** के लिए **'लाल आसन'** बिछाए और उस पर **'हनुमान जी'** का **'चित्र'** रखे। तब **'हनुमान जी'** की **'पूजा'** करे। **'पूजा'** में लाल-पीले फूल, सुगन्धित धूप या अगरबत्ती और शुद्ध देशी घी का **'दीपक'** रखे। **'पूजा'** करने के बाद उक्त **'मन्त्र'** का एकाग्र चित्त से ५००० बार **'जप'** करे। ऐसा ७ रात्रियों तक मध्य-रात्रि में करे। इससे कठिन-से-कठिन कार्य पूरा होता है।

विशेष— 'जप' एकान्त में करे और **'लाल वस्त्र'** धारण करे। **मङ्गलवार, सिद्धि-योग, अमृत-सिद्धि-योग, सर्वार्थ-सिद्धि-योग** अथवा **'दीपावली'** आदि **महा-पर्व** के काल **'साधना'** के लिए विशेष रूप से शुभ हैं। 'साधना' के लिए 'गुरुदेव' या 'मार्ग-दर्शक' से अनुमति एवं आशीर्वाद अवश्य लेले।

६

'श्रीलक्ष्मी'-नाम-मन्त्र-साधना

☐ पूर्व-मुख होकर आसन पर बैठे और अपने पास गन्ध, पुष्प, अक्षत, सामान्याघ्य-जल, कुश, काष्ठ आदि **पूजन-सामग्री** रक्खे।

☐ **'कुश'** से काष्ठ आदि सकल सामग्री का मार्जन करे।

☐ भूमि को **गो-मय** और **जल** से लीपे।

☐ तीन बार **'मूल-मन्त्र'** अथवा **'श्रीं'**-एकाक्षर-बीज का उच्चारण कर **हवन-सामग्री** को उठाए और **गो-मय** व जल से लीपे हुए स्थान पर स्थापित करे।

☐ **'मूल-मन्त्र'** अथवा **'श्रीं'**-एकाक्षर-बीज से **'महा-लक्ष्मी-स्वरूपा अग्नि'** को स्थापित करे और प्रोक्षित **'हवन-सामग्री'** को उसमें डाले।

☐ **माँ लक्ष्मी का ध्यान** कर **'मूल-मन्त्र'** अथवा **'एकाक्षर'**-बीज से तीन बार **'अग्नि'** का सिञ्चन कर पञ्चोपचारों द्वारा **'अग्नि' का पूजन** करे।

☐ फिर कमल-पुष्प, तिल, मधु, घृत, शक्कर, बेल-गूदा मिलाकर बेल की लकड़ी से निम्न-लिखित **'नाम'-मन्त्रों से 'हवन'** करे। पहले चार **व्याहृतियों की आहुतियाँ** दे—

१. ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये नमः।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं वायवे नमः।

३. ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय नमः।

४. ॐ भुर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजा-पतये नमः।

☐ अब **भगवती लक्ष्मी के 'नाम'-मन्त्रों से आहुतियाँ** दे—

ॐ श्रियै नमः स्वाहा

ॐ भू-देव्यै नमः स्वाहा

ॐ लीला-देव्यै नमः स्वाहा

ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

ॐ वरदायै नमः स्वाहा

ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः स्वाहा

ॐ वसु-प्रदायै नमः स्वाहा

ॐ हिरण्य-रूपायै नमः स्वाहा

ॐ स्वर्ण-मालिन्यै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-वासिन्यै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-हस्तायै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-प्रियायै नमः स्वाहा

ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः स्वाहा

ॐ चन्द्रायै नमः स्वाहा

ॐ सूर्यायै नमः स्वाहा

ॐ बिल्व-प्रियायै नमः स्वाहा

ॐ ईश्वर्य्यै नमः स्वाहा

ॐ भुक्त्यै नमः स्वाहा

ॐ मुक्त्यै नमः स्वाहा

ॐ विभूत्यै नमः स्वाहा

ॐ ऋद्ध्यै नमः स्वाहा

ॐ समृद्ध्यै नमः स्वाहा

ॐ तुष्ट्यै नमः स्वाहा
ॐ पुष्ट्यै नमः स्वाहा
ॐ कृष्ट्यै नमः स्वाहा
ॐ धनदायै नमः स्वाहा
ॐ धनेश्वर्यै नमः स्वाहा
ॐ श्रद्धायै नमः स्वाहा
ॐ भोगिन्यै नमः स्वाहा
ॐ भोगदायै नमः स्वाहा
ॐ सावित्र्यै नमः स्वाहा
ॐ धात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ गायत्र्यै नमः स्वाहा
ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा
ॐ हिरण्य-वर्णायै नमः स्वाहा
ॐ हरिण्यै नमः स्वाहा
ॐ सुवर्ण-रजत-स्रजायै नमः स्वाहा
ॐ हिरण्मय्यै नमः स्वाहा
ॐ अनपगामिन्यै नमः स्वाहा
ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
ॐ अश्व-पूर्वायै नमः स्वाहा
ॐ रथ-मध्यायै नमः स्वाहा
ॐ हस्ति-नाद-प्रबोधिन्यै नमः स्वाहा
ॐ ज्वलंत्यै नमः स्वाहा
ॐ तृप्तायै नमः स्वाहा
ॐ तर्पयंत्यै नमः स्वाहा
ॐ पद्म-स्थितायै नमः स्वाहा
ॐ पद्म-वर्णायै नमः स्वाहा
ॐ चन्द्र-प्रभासायै नमः स्वाहा
ॐ यशसा ज्वलंत्यै नमः स्वाहा
ॐ देव-जुष्टायै नमः स्वाहा
ॐ उदारायै नमः स्वाहा
ॐ पद्मनेम्यै नमः स्वाहा
ॐ अलक्ष्मी-नाशिन्यै नमः स्वाहा
ॐ आदित्य-वर्णायै नमः स्वाहा
ॐ गन्ध-द्वारायै नमः स्वाहा
ॐ दुराधर्षायै नमः स्वाहा
ॐ नित्य-पुष्टायै नमः स्वाहा
ॐ करीषिण्यै नमः स्वाहा
ॐ पुष्करिण्यै नमः स्वाहा
ॐ पिङ्गलायै नमः स्वाहा
ॐ सुवर्णायै नमः स्वाहा
ॐ हेम-मालिन्यै नमः स्वाहा
ॐ हरिणाक्ष्यै नमः स्वाहा
ॐ हरिद्राभायै नमः स्वाहा
ॐ आर्द्रायै नमः स्वाहा
ॐ सरसिज-निलयायै नमः स्वाहा
ॐ सरोज-हस्तायै नमः स्वाहा
ॐ धवल-तरायै नमः स्वाहा
ॐ शुभ-गन्ध-माल्यै नमः स्वाहा
ॐ भगवत्यै नमः स्वाहा
ॐ हरि-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ मनोज्ञायै नमः स्वाहा
ॐ त्रिभुवन-भूति-करायै नमः स्वाहा
ॐ पद्मानन्नायै नमः स्वाहा
ॐ पद्माक्ष्यै नमः स्वाहा

ॐ पद्म-सम्भवायै नमः स्वाहा
ॐ क्षमायै नमः स्वाहा
ॐ माधव्यै नमः स्वाहा
ॐ माधव-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ विष्णु-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ अच्युत-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ देव-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ विश्व-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ विश्व-मनोऽनुकूलायै नमः स्वाहा
ॐ श्रीरमा-देव्यै नमः स्वाहा
ॐ श्रीसीतायै नमः स्वाहा
ॐ श्रीराधायै नमः स्वाहा
ॐ श्रीरुक्मिण्यै नमः स्वाहा
ॐ वेदवत्यै नमः स्वाहा
ॐ त्रिपाद-विभूत्यै नमः स्वाहा
ॐ कमलायै नमः स्वाहा
ॐ कमलालयायै नमः स्वाहा
ॐ चञ्चलायै नमः स्वाहा
ॐ हरि-प्रियायै नमः स्वाहा
ॐ दारिद्र्य-परिहारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ गृह-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
ॐ त्रैलोक्य-पूजितायै नमः स्वाहा
ॐ विष्णु-वल्लभायै नमः स्वाहा
ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा
ॐ लोक-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
ॐ अमृतोद्भवायै नमः स्वाहा
ॐ स्वर्ण-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ स्वर्ण-प्रभायै नमः स्वाहा
ॐ मुक्तिदायै नमः स्वाहा
ॐ भुक्तिदायै नमः स्वाहा
ॐ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रूपायै नमः स्वाहा
ॐ वरारोहायै नमः स्वाहा
ॐ शार्ङ्गिण्यै नमः स्वाहा
ॐ लोक-धात्र्यै नमः स्वाहा
ॐ ब्रह्म-मात्रे नमः स्वाहा
ॐ पद्म-मुख्यै नमः स्वाहा
ॐ पद्म-कान्त्यै नमः स्वाहा
ॐ जगत्प्रसूत्यै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-जीव-शरण्यायै नमः स्वाहा
ॐ करुणाकरायै नमः स्वाहा
ॐ वात्सल्य-सागरायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-सौलभ्यायै नमः स्वाहा
ॐ कोटि-कन्दर्प-लावण्यायै नमः स्वाहा
ॐ सौन्दर्य-सागरायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यायै नमः स्वाहा
ॐ शरणागत-परित्राणायै नमः स्वाहा
ॐ दीनार्ति-हारिण्यै नमः स्वाहा
ॐ सर्वारिष्ट-शान्ति-करायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-रोग-ग्रह-बाधादि-शमनायै नमः स्वाहा
ॐ सर्वापत्ति-वारणायै नमः स्वाहा
ॐ सदानुग्रह-सम्पन्नायै नमः स्वाहा
ॐ धन-धान्य-समृद्धि-करायै नमः स्वाहा
ॐ पुत्र-पौत्र-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ वंश-वृद्धि-करायै नमः स्वाहा

ॐ सर्वाभीष्ट-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-मनो-वाञ्छित-फलदायै नमः स्वाहा
ॐ सर्वानुष्ठान-सिद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-विधि-विजय-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ हय-भू-गजाश्व-गो-भृत्यादि-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ दिव्यैश्वर्य-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ दिव्य-ज्ञान-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ सत्-सम्प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ शीघ्र-प्रसन्नायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-शान्ति-करायै नमः स्वाहा
ॐ सर्व-मङ्गल-प्रदायै नमः स्वाहा
ॐ साङ्गायै नमः स्वाहा
ॐ सायुधायै नमः स्वाहा
ॐ सपरिवारायै नमः स्वाहा
ॐ सपरिकरायै नमः स्वाहा
ॐ स-पार्षदायै नमः स्वाहा
ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

☐ अन्त में **माता लक्ष्मी के पुत्रों के 'नाम'-मन्त्रों से आहुतियाँ** दे—

१ ॐ देव-सखाय नमः स्वाहा
२ ॐ चिक्लीताय नमः स्वाहा
३ ॐ आनन्दाय नमः स्वाहा
४ ॐ कर्दमाय नमः स्वाहा
५ ॐ श्रीप्रदाय नमः स्वाहा
६ ॐ जातवेदाय नमः स्वाहा
७ ॐ अनुरागाय नमः स्वाहा
८ ॐ सम्वादाय नमः स्वाहा
९ ॐ विजयाय नमः स्वाहा
१० ॐ वल्लभाय नमः स्वाहा
११ ॐ मदाय नमः स्वाहा
१२ ॐ हर्षाय नमः स्वाहा
१३ ॐ बलाय नमः स्वाहा
१४ ॐ तेजसे नमः स्वाहा
१५ ॐ दमकाय नमः स्वाहा
१६ ॐ सलिलाय नमः स्वाहा
१७ ॐ गुग्गुलाय नमः स्वाहा
१८ ॐ कुरुण्टकाय नमः स्वाहा

☐ उक्त **'नाम'-मन्त्रों द्वारा 'हवन'** करने के बाद निम्न-लिखित मन्त्र द्वारा **भगवती महा-लक्ष्मी के चरणों में 'जल'** अर्पित कर **'प्रणाम'** करे—

'अनेन होमाख्येन कर्मणा महा-लक्ष्मीः प्रीयताम्।'

☐ फिर निम्न मन्त्र पढ़कर 'अग्नि' का विसर्जन करे—

ॐ भो भो वह्ने! महा-शक्ते! सर्व-काम-प्रसाधक!
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम्॥

विशेष—माँ लक्ष्मी के उक्त **'नाम'-मन्त्रों से नित्य 'हवन'** करने से **अभीष्ट धन की प्राप्ति** होती है।

* * *

श्रीमहा-लक्ष्मी-सप्त-विंशाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग—ॐ अस्य श्रीमहा-लक्ष्मी-सप्त-विंशाक्षर-मन्त्रस्य श्री भृगु ऋषिः, निवृद्-गायत्री छन्दः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, श्रीं-बीजम्, ह्रीं-शक्तिः, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीभृगु-ऋषये नमः शिरसि, निवृद्-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः हृदये, **श्रीं**-बीजाय नमः गुह्ये, **ह्रीं**-शक्तये नमः पादयोः, श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास	**कर-न्यास**	**अङ्ग-न्यास**
श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि श्रीं ह्रीं श्रीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
श्रीं ह्रीं श्रीं नमः श्रीं ह्रीं श्रीं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— सिन्दूरारुण-कान्तिमब्ज-वसतिं सौन्दर्य-वारां निधिः,

कोटीराङ्गद - हार - कुण्डल-कटी-सूत्रादिभिर्भूषिताम्।

हस्ताब्जैर्वसु-पात्रमब्ज-युगलादर्शौ वदन्तीं परा—

मावीतां पारिचारिकामिरनिशं ध्यायेत् प्रियां शार्ङ्गिणः।।

अर्थात् सिन्दूर के समान देह की अरुण कान्ति। पद्म के ऊपर विराजमान। अनुपम सौन्दर्य-वती। इन्द्रनील, मणि, वलय, हार, कुण्डल और करधनी आदि आभूषणों से विभूषिता। हाथों में रत्न-पूर्ण पात्र, दो कमल और दर्पण लिए हुई। सेविकाओं से घिरी हुई। भगवान् विष्णु की प्रिया महा-लक्ष्मी का मैं ध्यान करता हूँ। (देखिए, आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित चित्र)

मानस-पूजन—ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमहालक्ष्मी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ शं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र— ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः। (२७ अक्षर)।

वर्ण-माला में जप—

ॐ

१ अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

२ आं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः आं

३ इं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः इं

४ ईं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ईं

५ उं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः उं

६ ऊं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऊं

७ ऋं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऋं

८ ॠं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ॠं

९ लृं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लृं

१० लॄं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लॄं

११ एं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः एं

१२ ऐं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऐं

१३ ओं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ओं

१४ औं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः औं

१५ अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

१६ अः ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अः

१७ कं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः कं

१८ खं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः खं

१९ गं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः गं

२० घं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः घं

२१ ङं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ङं

२२ चं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः चं

२३ छं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः छं

२४ जं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः जं

२५ झं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः झं

२६ ञं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ञं

२७ टं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः टं

२८ ठं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ठं

२९ डं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः डं

३० ढं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ढं

३१ णं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः णं

३२ तं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः तं

३३ थं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः थं

३४ दं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः दं

३५ धं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः धं

३६ नं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः नं

३७ पं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः पं

३८ फं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः फं

३९ बं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः बं

४० भं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः भं

४१ मं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः मं

४२ यं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः यं

४३ रं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः रं

४४ लं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लं

४५ वं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः वं

४६ शं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः शं

४७ षं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः षं

४८ सं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः सं

४९ हं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः हं

५० ळं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ळं

क्षं

५१ ळं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ळं

५२ हं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः हं

५३ सं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः सं

५४ षं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः षं

५५ शं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः शं

५६ वं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः वं

५७ लं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लं

५८ रं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः रं

५९ यं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः यं

६० मं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः मं

६१ भं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः भं

६२ बं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः बं

६३ फं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः फं

६४ पं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः पं

६५ नं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः नं

६६ धं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः धं

६७ दं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः दं

६८ थं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः थं

६९ तं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः तं

७० णं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः णं

७१ ढं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ढं

७२ डं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः डं

७३ ठं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ठं

७४ टं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः टं

७५ ञं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ञं

७६ झं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः झं

७७ जं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः जं

७८ छं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः छं

७९ चं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः चं

८० ङं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ङं

८१ घं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः घं

८२ गं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः गं

८३ खं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः खं

८४ कं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः कं

८५ अः ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अः

८६ अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

८७ औं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः औं

८८ ओं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ओं

८९ ऐं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऐं

९० एं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः एं

९१ लृं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लृं

९२ लृं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः लृं

९३ ॠं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ॠं

९४ ऋं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऋं

९५ ऊं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ऊं

९६ उं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः उं

९७ ईं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः ईं

९८ इं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः इं

९९ आं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः आं

१०० अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

१०१ अं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः अं

१०२ कं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः कं

१०३ चं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः चं

१०४ टं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः टं

१०५ तं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः तं

१०६ पं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः पं

१०७ यं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः यं

१०८ शं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः शं

* * *

भगवती लक्ष्मी एवं दीपावली हेतु उपयोगी पुस्तकें

१- श्रीकमला कल्पतरु ४५/-

सर्वाभीष्ट-दात्री लक्ष्मी की उपासना का विस्तृत विवरण।

२- दीपावली की पूजा-विधि १५/-

'दीपावली' महा-पर्व पर प्रामाणिक पुस्तक। (१) धन-त्रयोदशी, (२) नरक चतुर्दशी, (३) दीपावली, (४) अन्न-कूट (गोवर्द्धन-पूजा), (५) भ्रातृ-द्वितीया या भैया-दूज— पञ्च-महा-पर्व-विषयक एक आवश्यक पुस्तक।

३- धन-प्राप्ति के प्रयोग ६/-

दरिद्रता का निवारण, भगवती लक्ष्मी की उपासना, धनदा प्रयोग, पर्व-प्रयोग, सिद्ध स्तोत्र, सिद्ध बीसा यन्त्र, पञ्च-दशी मन्त्र, कुबेर-मन्त्र, सविधि श्रीकनक-धारा स्तव, माँ कमला के कुछ विशिष्ट मन्त्र— आदि जैसे उपयोगी विषयों से पूर्ण एक बहु-उपयोगी लघु-पुस्तक।

श्रीमहा-लक्ष्मी की सिद्ध आरती

बाबाश्री द्वारा रचित **भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी की आरती** का यहाँ एक संक्षिप्त रूप प्रस्तुत है। इसे **कंठस्थ** कर **नित्य श्रद्धा से 'पाठ'— 'आरती'** करे, तो **सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति** होती है। साथ ही **कष्टों का निवारण** भी होता है। यह **अनुभूत** है। **'आरती'** यदि पूरा परिवार सामूहिक रूप से करे, तो अति उत्तम। —सम्पादक

कांत्या काञ्चन संनिभा, हिम-गिरि आसीना— माँ हिम-गिरि आसीना।
अमरित-सर-सरसिज-दल, सहस्र सदासीना।
पद्मासिनि कमलासिनि, गज-द्वय द्वय दोनों—माँ गज-द्वय द्वय दोनों।
ओर भरे घट अमरित, सींचत कर दोनों।
जय देवि, जय देवि, द्वय कर कमल-धरा माँ, कर-द्वय कमल-धरा।
वर कर अपर अभय कर, चतुर करा मधुरा।। जय देवि, श्रीलक्ष्मी।।१
अम्ब प्रसीद करुण दृग्गरुण छटा-लहरी—माँ अरुण छटा-लहरी।
निज जन अतुल प्रदायनि, हरि चित्पर सहरी।
सम्पत्सुखद सनातनि, दुःख-दारिद-हारिणी—माँ दुःख-दारिद-हरिणी।
हृद्-गत शोक-विनाशिनि, पर हरि-मन-वरिणी।। जय देवि, जय देवि०।।२
कान्तिशशान्ति - मयी त्वं, शरणागत पाता— माँ शरणागत पाता।
विष्णु-प्रिया सर्वेश्वरि, शक्ति सरा माता।
क्षांतिर्भक्ति स्वजन प्रण-रक्षिणि सिध्यवधी— माँ रक्षिणि सिध्यवधी।
धृति धात्री जग धारणि, रति मति देव निधी।। जय देवि, जय देवि०।।३
लक्ष्मी लक्ष प्रदामा, कोटि प्रदा करुणा— माँ कोटि प्रदा करुणा।
गति सति भूति भुवन भर, वरुणालय करुणा।
स्थिति पोषणि भव-शोषणि, निर्मल मल हरिणी— माँ निर्मल मल हरिणी।
भव - जल पुण्य-परायणि, दुःख सरतर तरिणी।। जय देवि, जय देवि०।।४
आगच्छागच्छ त्वं, तुम बिन जग फीको—माँ तुम बिन जग फीको।
दास दया धरि विनवत, जन कर धर नीको।
सदयि दया-मयि अयि, निज जन आपद त्राता—माँ निज जन आपद त्राता।
माता भ्रात सखा तुम, जन तन मन नाता।। जय देवि, जय देवि०।।५

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय के उपयोगी प्रकाशन

१. **योगिनी-हृदयम्** ३३-४०
(अमृतानन्द योगी की 'दीपिका' एवं श्रीभाष्कर राय की 'सेतुबन्ध' संस्कृत टीकाओं के साथ)

शारदा-तिलकम् १५०-००
('पदार्थादर्श' संस्कृत-टीका के साथ।)

. **गो-रक्ष-सिद्धान्त-सङ्ग्रहः** १०-५०
(नाथ-सम्प्रदाय का मूर्धन्य ग्रन्थ।)

. **परमानन्द-तन्त्रम्** ९६-००
'सुबोधा'-नामक संस्कृत-व्याख्या के साथ।

. **अष्ट-प्रकरणम्** ८०-००
(शैवागम का महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ।)

. **नित्या-षोडशिकार्णवः** ७६-००
(शिवानन्द की 'ऋजु-विमर्शिनी' तथा विद्यानन्द की 'पदार्थ-रत्नावली' संस्कृत टीकाओं के साथ)

शाक्तानन्द-तरङ्गिणी ४४-००

रुद्र-यामलम् (भाग १ एवं भाग २) २९६-००

श्रीत्रिपुरार्णव-तन्त्रम् ९६-००

०. **तन्त्र-सङ्ग्रहः (पाँच भागों में)** ४१४-००

. **गौतमीय-महा-तन्त्रम्** ९६-००

२. **श्रीतन्त्रालोक : (८ सजिल्द खण्डों में)** १४००-००
(आचार्य श्री अभिनव गुप्त द्वारा विरचित प्रसिद्ध ग्रन्थ आचार्य श्रीजयरथ की 'विवेक' एवं डॉ० परमहंस मिश्र की 'नीर-क्षीर-विवेक' हिन्दी-व्याख्या के साथ)

. **काली-कल्पद्रु-वल्लरी** २४०-००

. **लुप्तागम-सङ्ग्रहः (दो-भाग)** २०६-००

. **स्वच्छन्द-तन्त्रम् (५ भागों में)** ३१०-००

. **त्रिपुरा-रहस्यम्** १४०-००

. **ज्ञान-दीप-विमर्शिनी** २२०-००

. **नवरात्र-प्रदीप** ६०-००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज २११००६

रजि० सं० ए० डी० ६१ नवम्बर-दिसम्बर, २००१ रजि० सं० ३२६८१/५७

सम्पादक/प्रकाशक/मुद्रक : श्रीऋतशील शर्मा, चण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ५०२७८३